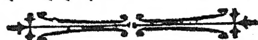
सत्यनाम.

श्रीकबीर भजन माला।



महोपदेशक महन्त शंभुदास कबीर-
पन्थी इन्दौरनिवासीने बडे
परिश्रमसे संग्रह किया।



वही
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् मुद्रणालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९८४ शाके १८४९

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

सत्यनाम ।

भूमिका ।



श्रीकबीरभजनमाला ।

चञ्चल मनको वश करनेके लिये गायन आकर्षण विद्या है । अज्ञान जीव भी गीतको सुनकर एकटक ध्यानमग्न होजाते हैं।श्रवण मनन निदिध्यासनसे जो मन बडे क्लेशसे वशमें होताहै उसके लिये सङ्गीत बडी तीव्र औषधि है; यही समझकर विरक्त महात्मा भगवद्भजनमें मग्न हो गायनकलासे अपने ही नहीं बल्कि सैकडों हजारों श्रोताओंके मनमें भी आकर्षण उत्पन्नकर उन्हें भगवद्भक्त बना देते हैं।इसलिये साधु महात्मा लोग मदमत्त हस्तीके समान चञ्चल और बलवान् मनको वशमें करनेके लिये नीति, बोध, भगवद्भक्ति, व्यवहार शुद्धि, संसारस्वरूप,जीव और उसका संसार तथा उसके

पदार्थोंसे सम्बन्ध, माया और इन्द्रियोंके अधीन हो अज्ञहो दुःख भोगना इत्यादिविषयोंको चेतावनीसे सगुण निर्गुण भजनोंको गाया करते हैं, उन्हींको सर्वसाधारण लोग गावें, सुनें, सुनावें और विचारें इस आशयसे इन्दौरनिवासी महोपदेशक महन्त शम्भुदासजी कबीरपन्थीने उत्तम उत्तम भजनोंका संग्रह किया है, हमने धन्यवाद पूर्वक आपकी सङ्ग्रहीत इस भजन मालाको संसारमें प्रकाश होनेके निमित्त अपने मुद्रणयन्त्रालयमें मुद्रित किया है । आशा है कि भजनप्रमी इसके भजनोंके गायनसे लाभ उठावेंगे स्वामीजी विद्वान् तथा भक्त हैं इससे इनके बनाये भजन बडे असर करनेवाले हैं, लोगोंको शीघ्र पुस्तक खरीदना चाहिये।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस.

श्रीकबीरभजनमालाकी
पदानुक्रमणिका ।

इति पदानुक्रमणिका।

सत्यनाम ।

सत्यकबीराय नमः ।

श्रीकबीरभजनमाला ।



मंगलाचरण दोहा ।

सबविधि मुदमंगल करण, हरण अशेष कलेश।
सत्यनाम सम नाम नहिं, वरदायक वरदेश॥ १॥
मंगलमय मंगल करण, मंगलरूप कबीर ।
ध्यान धरत नाशत सकल, कर्मजनित भवपीर २
वन्दों सत्यकबीरके, चरणकमल शिर नाय ।
जासु ज्ञान दिनकर निकर, भ्रमतम देत नशाय ३
भ्रम छोडाय पथ विकटको, निकट लखायो राम।
तासे गुरुको कीजिये, कोटिकोटि परनाम ॥ ४॥
गुरुकी महिमा कहिसके, कहाँ ऐसी मति मोरि ।
विनयसहित वन्दन करों, चरण कमल करजोरि ५

मंगलाचरणभजन—ध्वनि खम्माच ।

ध्याइये[१] गुरु–पद[२] सुखदायक ॥ टे० ॥
विघनहरण मुद[३]करण सुमंगल[४] ।
ऋद्धि[५] सिद्धि[६] वरदेश[७] विनायक[८] ॥
नाम लेत सब पाप प्रनाशत ।
बहुजन्मन[९]–कृत मनवच[१०]कायक ॥
करुणासिन्धु कृपालु दयानिधि ।
शरणागतवत्सल[११] सब लायक ॥
तारण तरण भक्तभवभंजन[१२] ।
अधमउधारन[१३] सन्तसहायक ॥

---

१ ध्यान करना चाहिये । २ चरणकमल । ३ आनन्द । ४ सुन्दर कल्याण । ५ लक्ष्मी । ६ सफलता । ७ बरदान देनेवाले । ८ विशेष श्रेष्ठ । ९ अनेक जन्मोंके । १० मन वाणी और शरीरसे किये हुए । ११ शरणमें आयेकी रक्षा करनेवाले । १२ भक्तोंके दुःख नाश करनेवाले । १३ पापियोंको तारनेवाले ।

धर्म्मदास इति वंदत[1] विनयकारि ।
सत्यकबीर मोरे पितु मायक[2] ॥ १ ॥

धर्म्मदास साहबको मथुरामें दर्शन देनेके पश्चात् बहुत दिनोंतक जब सद्गुरुने पुनः दर्शन नहीं दिये तब धर्म्मदास साहबने सद्गुरुकी इसप्रकार प्रार्थना की है ।

गजल-ध्वनि ईमन ।

हे नाथ ! इस जगतमें सिवा कौन तुम्हारे ? ।
माता पिता स्वामी सखा बन्धू हैं हमारे ॥ टे०॥
ऐसा दयाल और नहीं दूसरा धनी ।
कारि कष्ट नष्ट जीवके दुखद्वन्द्व निवारे ॥
जब जब तुम्हारा नाम लै भक्तोंने पुकारा ।
तब २ सहाय करनेको आपी तो सिधारे ॥
चारों युगोंमें धारि रूप तुम प्रगट भये ।

१ ऐसे नम्रतापूर्वक कहते हैं । २ एक माता पिता है।

पापी अनेक तारके भवपार उतारे ॥
महिमा अनन्त आपकी कोई न कहसके ।
यह जानि भेद वेद नेतिनेति उचारे ॥
अब बेगि मोहिं दीजे दर्शन कृपानिधे ।
होय अतिअधीन दीन धर्म्मदास पुकारे ॥ २ ॥

गजल ।

बिनती मेरीपै ध्यान जो है तुम्हारा नहीं ।
आश्रित क्या दास आपका मैं विचारा नहीं॥टे०
मैं तो अनाथ मेरे कौन दूसरा धनी ? ।
एक छोड तुम्हें और मुझे सहारा नहीं ॥
मेरी तो दौड फक्त तुम्ही तक कृपानिधे ।
तीनों भवनमें और कहीं गुजारा नहीं ॥
कई एक दफे जो आफतें भक्तोंपै आपडीं ।
तो आपने क्या उनके दुखको निवारा नहीं ?॥
क्या मुझसरीके पातकी तुमने कभी कोई ।

भवसिन्धु डूबतेसे पार उतारा नहीं ? ॥
माना कि मैंने पाप मेरे हैं प्रबल सही ! ।
पर कम भी तुह्मारी दयाका इशारा नहीं ॥
दर्शन जो अबतलक न दिये आपने कबीर ।
क्या लैके धर्म्मदास नाम पुकारा नहीं ॥ ३ ॥

भजन राग बनजारा ।

धन ! धन ! सतगुरु सत्यकबीर,
भक्त–भव पीर मिटानेवाले ॥ टे० ॥
रहे नल नील यत्नकरी हार,
तबे रघुबीरने करी पुकार ।
जाय सतरेखा लिखी सुधार,
सिन्धुमें शिला तिरानेवाले ॥
डस्यो विषधरने है जब आय,
पुंकार्‍यो इन्द्रमती अकुलाय ।
धायके कीजे बेगि सहाय,

बिरहुली मंत्र सुनानेवाले ॥
दामोदर शाहने होत अकाज,
अरजकी डूबत देखि जहाज ।
लाज रख लीजे गरीबनिवाज,
आज निधिपार लगानेवाले ॥
कहें करजोरि दीन धर्म्मदास,
दरश दै पूरण कीजे आस ।
मेटिये ! जन्म मरणकी त्रास,
सत्यपद प्राप्त करानेवाले ॥ ४ ॥

भजन-ध्वनि प्रभाती ।

ढूंढ २ मैं हारा मेरे सतगुरु! मिला न दरश तुम्हारा। टे०
रामेश्वर जगदीश द्वारिका, बद्रीनाथ केदारा ।
काशी मथुरा और अयोध्या, ढूँढा गिरि गिरनारा॥
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, भटका सब संसारा।
अरसट तीरथमें फिर आया, दरशहेतु बहुवारा ॥

जप तप व्रत उपवास किए बहु, संयम नियम अचारा
भई न भेंट नाथ स्वपनेहुमा, अस कहाँ भाग्य हमारा॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा, व्याकुल है तन सारा।
अब तो धर्म्मदासको कीजे! दरशन दै भवपारा॥ ९॥

इस प्रकारसे जब धर्म्मदास साहबने बहुत कुछ प्रार्थना की तब सद्गुरु उनके सम्मुख प्रगट होकर दर्शन दिये और यह भजन गाने लगे।

भजन–ध्वनि श्यामकल्याण।

मोको कहाँ ढूंढे बन्दे मैं तो तेरे पासमें॥ टे०॥
ना तीरथमें ना मूरतमें, ना एकान्त निवासमें।
ना मन्दिरमें ना मस्जिदमें, ना काशी कैलासमें॥
ना मैं जपमें ना मैं तपमें, ना मैं वरत उपासमें।
ना मैं किरिया कर्ममें रहता, नहीं योग संन्यासमें॥
नहीं प्राणमें नहीं पिण्डमें, ना ब्रह्माण्ड अकाशमें।
ना मैं भ्रकुटी भवँर गुफामें, सब स्वासनकी स्वासमें॥

खोजी होय तुरत मिलजाऊँ, इक पलकीही तलासमें
कहें कबीर सुनो भाई साधो! मैं तोहूँ विस्वासमें॥६॥

सद्‌गुरुका दर्शन पाकर धर्म्मदास साहबने इस प्रकारसे स्वागत किया ।

ध्वनि–गजल ।

परम मंगल आज स्वागत आपका है आइये ! ।
दरश दै पद परशका सौभाग्य प्राप्त कराइये! टे०॥
काम क्रोध अबोध जो उरमें सदा भरपूर है ।
इनको अब जड मूलसे करि चूर धूर उडाइये ॥
आधि व्याधि-उपाधि आदि अनादिसे पीछे लगीं।
सबसे प्रभु सुखकन्द करि स्वच्छन्द फन्द छुडाइये॥
बोधका अवरोध है आकर अविद्याने किया ।
चरणकी लै शरणमें आवर्ण दूर हटाइये ॥
कृपा करि बहते हुए धर्म्मदासको भवधारसे ।
नाथ जानि अनाथ अब गहि हाथ पार लगाइये७॥

गजल ।

कृपासिन्धू ! मुझे अपना बना लोगे तो क्या होगा?।
जरा सतनाम कानोंमें सुनादोगे तो क्या होगा?॥टे०
दया करनेको जीवोंपर जो तुम दुनियामें आयेहो।
मेरी भी तर्फ इकदृष्टी झुका दोगे तो क्या होगा?॥
सकल जगमें पतित पावन तुम्हारा नाम जाहिर है।
अगर मुझ एक पापीको भी तारोगे तो क्या होगा?॥
अखण्डित ज्ञानकी धारा बरषके परम सुखदाई ।
प्रबल त्रैतापकी अग्नी बुझा दोगे तो क्या होगा?॥
परम सिद्धान्त वेदोंका लखाके आतमा मुझको ।
मेरे दिलसे अविद्याको हटा दोगे तो क्या होगा?॥
कई मुद्दतसे गोते खा रहाहूँगा बिचारा मैं ।
सहारा दैके चरणोंका बचादोगे तो क्या होगा?॥
पडीहै आय अब मेरी प्रभू भवधारमें नैया ।
खेवैया बन किनारेपर लगादोगे तो क्या होगा? ॥

अरज धर्मदासकी प्रभुजी फकत चरणोंमें ये है कि।
जनम अरु मरणके दुखसे छुडादोगे तो क्या होगा?॥

प्रार्थना भजन (राग देश)

प्रभु मोहिंतन तनक निहारि कृपा
अब कीजे हो ? ॥ टेक० ॥
जन्म मरण अरु गर्भ बसेरो,
आधि व्याधि दुख सहत घनेरो ।
भयो छीन अतिदीन,
बाहँ गहि लीजे हो ! ॥ १ ॥ प्र०मोहिं०॥
कृमि पतङ्ग पन्नग पशु राशी,
योनिनमें भोगत चौरासी ।
अस लखि क्लेश दयालु,
तुम्हें बिन कौन पसीजे हो ! ॥ २॥ प्र० ॥
रह्यो बहुत दिन बिमुख चरणसे,
डर्‌यो न उर भवकूप परनसे ।

लखि यह अनुचित कर्म्म कोई,

नहिं मोहिं पतीजे हो ! ॥ ३ ॥ प्र० ॥

धर्म्मदास यदि बहु अघ कीन्हो,

तदपि तुम्हारो शरणा लीन्हो ।

आश्रित अपनो जानि,

अभय वर दीजे हो ! ॥ ४ ॥ प्र० ॥ ९॥

चौका आरती (गुरुपूजा) करनेके समय सद्गुरुको बुलानेके विचारसे धर्मदास साहबने यह पद गाया ।

राग खम्माच ।

आज मोरे सतगुरुको गृह लाऊँ ॥ टे० ॥

चरणधोय चरणामृत लैकरिसिंहासन बैठाऊँ॥आ०

चन्दनसेचौकालिपवाऊँ,मोतियनचौकपुराऊँ॥आ०

नारियर पान सुपारी केला,फलअनेक मँगवाऊँ॥आ०

घेतमिठाई बिबिधभाँतिकीथारन माहिंभराऊँ॥आ०

कञ्चन कलश कपूरकी बाती, आरति साजि धराऊँ॥
अमृत झारी प्रेमसहित लै, प्रभुजीको भोग लगाऊँ ॥
तनमनधन निछावरकरिके, आनँदमंगलगाऊँ॥आ०
धर्म्मदास बिनवैकरजोरी, भक्तिदानगुरुपाऊँआ. १०

सद्गुरुके उपस्थित होनेपर धर्मदास साहबने यह पद गाया।

कौसिया काफी ।

आज मोरे घर साहिब आये,
दर्शन करि दोऊ नैन जुडाये ॥ टे० ॥
विगत क्लेश अखिलेश दयानिधि,
सत्य नाम निज मंत्र सुनाये ।
तिलक भाल उरमाल मनोहर,
शीश मुकुट मणिमय छबि छाये ॥ आ० ॥
चन्दनसे चौका लिपवायो,
गज मोतियनकी चौक पुराये ।

बाजत ताल मृदङ्ग झाँझ डफ,
साधु सन्त मिलि मंगल गाये ॥ आ० ॥
दुख दारिद्र दूर सब भागे,
काम क्रोध मद मोह दुराये।
भयो अनन्द भवनमें चहुँदिश,
चरण कमल रज शीश चढाये ॥ आ० ॥
कञ्चनथार सवाँरि आरती,
धरमिनि करतहै हिय हुलसाये।
करुणा सिन्धु कबीर कृपानिधि,
सत्यनाम निज मंत्र सुनाये ॥ आ० ॥११॥

धर्मदास साहबने दीक्षा लेनेके पश्चात् यह भजन गाया।

भजन—ताल दादरा।

मैं वारीजाऊँसतगुरुकी, मेरोकियो भरमसबदूर॥टे०
प्यालो पायो प्रेमको, घोरि सजीवन मूर।

चढी खुमारी नामकी, होगई चकना चूर॥मैं वा०॥
विमल प्रकाश अकाशमें, लख्यो बिना शशि सूर।
मगन भयो मन गगनमें, सुनिके अनहद तूर॥मैं वा०
ममता घटि समता बढी, उर अन्तर भरपूर।
राग द्वेष जगसे मिटयो, अब मन भयो मंजूर॥मैं वा०
शब्द सुनत यम दूतके, मुखमें लागी धूर।
आय मिले धर्मदासको, सतगुरु हाल हजूर॥मैं० १२

दीक्षा लेनेके पश्चात् सतगुरुका उपकार मानना।

भजन।

मेरी सतगुरु पकरी बाँह। नहीं तो मैं बहि जाती। टे०।
कर्मजालमें उरझिकै, आय पडी भवधार।
विषय वासनाके विवश, व्याकुल भई अपार॥
हृदयमें अकुलाती॥ मेरी सतगुरू पकरी बाँह, न०।
मात पिता परिवार सब, लोक कुटुम धन धाम।
अन्तसमय परलोकमें, कोई न आवै काम॥

बन्धु बेटानाती॥मेरी सतगुरूपकरीबाँह,नहींतोमैं०
भजै नहीं सतनाम जो, जन मानुष तन पाय ।
पाप कर्मसे परत वह, नर्क वासमें जाय ॥
देखिफाटै छाती॥मेरीसतगुरुपकरीबाँह,नहींतो मैं०
यह सतगुरु उपदेशकी, भनक परी मेरे कान ।
उदय भयो विज्ञान उर, नाश भयो अभिमान॥
घनी राती माती॥मेरीसतगुरुपकरीबाँहनहीं तो मैं०
करजोरे धरमिनि कहै, करुणा सिन्धु कबीर ! ।
तुम नहिं होते जगतमें, को हरतो यह पीर ॥
तभी तो मैं गुणगाती॥मेरी सतगुरुपकरी ० ॥१२॥

सद्गुरुकी स्तुतिपूर्वक कृतज्ञता प्रकाश ।

ठुमरी ।

नाथ तुम्हारी महिमा कौन जाने ? ।
अद्भुत चरित अपार विशद यश,
नेति नेति श्रुति सारी बखाने ।

तुम्हारी महिमा कौन जाने ? ॥ टे० ॥
व्यास वसिष्ठ महान मुनीश्वर,
ध्यान विशेष विचार निरन्तर ।
करत करत सब थाके सयाने,
तुह्मारी महिमा कौन जाने ॥ १ ॥
विश्वामित्र पराशर औरहु,
ऋषिगण बने जो त्यागी हैं बहु ।
सबही ये मायाके छलसे भुलाने,
तुम्हारी महिमा कौन जाने ॥ २ ॥
तुम सम को कृपालु करुणाकर,
तनकहिमें अति द्रवहु दीनपर ।
विरद हेतु निज उर सकुचाने,
तुम्हारी महिमा कौन जाने ॥ ३ ॥
धर्म्मदासको दरशन दीनो,
दीन जानि अपनो कर लीनो ।

तीनों ताप समूल नशाने,
महिमा कौन तुम्हारी जाने ॥ १४ ॥

मनको एकाग्र करनेके लिये सद्गुरुने सुरत-शब्द योग करनेका अभ्यास बताया है उस अभ्यासके करनेमें धर्मदास साहबको जब कठिनता मालूम हुई तब यह पद गायाहै ।

भजन-ध्वनि काफी ।

मिलना कठिन है, मैं कैसे मिलूं पियाजाय ॥ टे० ॥
समुझि सोचि पग धरूंयतनसे, करिबहु भाँतिउपाय।
ऊँची शैल गैल रपटीली, पावँ नहीं ठहराय ॥मि०॥
लोक कुलकी मर्यादासे, बहु मन सकुचाय ।
धाय मिलूं पियसे पीहरमें, तो अनरीतदिखाय॥मि०॥
शुन्न शिखरपर पियका महल है, श्वेत ध्वजा फहराय।
शब्दस्वरूपीपियाबसेतहाँ, सुरतिझकोराखाय॥मि०
दूती सुमति आय धरमिनिको, दीनो पियहि मिलाय।

पियानेपकारिप्रेमसेबहियाँ, लीनोकंठलगाय॥मि. १९

बन्धसे छुडानेके लिये सद्‌गुरुसे प्रार्थना ।

लावनी ।

भवडूबत पार उतारो, गहि हाँथ नाथ मोहिं तारो।
करुणा निधान हितकारी, मैंआयोशरणतुम्हारी॥टे०
यद्यपि मैं अति अघकर्मी, नहिं मोसम कोऊ अधर्म्मी।
तद्यपि तुम्हारि प्रभुताई, कुछ न्यून न देत दिखाई ॥
गावत गुण हैं श्रुति सारी, मैं आयो शरण तुम्हारी १
सब लोग कुटुम हैं मेरे, निज स्वारथको बहुतेरे।
यमराज पकड लै जावै, तब काम कोई नहिं आवै॥
यह बात हृदयमें विचारी, मैं आयो शरण तुम्हारी २॥
करि कृपा कुबोध विनाशो, सतज्ञान हृदयमें प्रकाशो।
भ्रम संशय शोक घनेरो, सब दूर करो प्रभु मेरो॥
निज दास जानि अधिकारी, मैं आयोशरणतुम्हारी ३
कहे धर्म्मदास करजोरी, इतनी बिनती प्रभु मोरी।

जन जानि अनुग्रह कीजे,गुरुभक्ति दान मोहिंदीजे॥
तनमनधनचरणन वारी,मैं आयो शरण तुम्हारी १६

गज़ल ।

भक्तीसे प्रभु तुम्हारी जो मुँह छिपा रहाहै ।
अपने कियेके फलको, आपी वो पा रहाहै ॥
आपी वो पा रहाहै, संकट उठा रहाहै ।
हरएक तरेसे रोरो, आँसू बहा रहाहै ॥ टे० ॥
आतेही माके गर्भमें, जैसा कि दुख सहाहै ।
वैसा बयान मुझसे, जाता नहीं कहाहै ॥
पैरोंके बीच शिर किये, उलटा टँगा रहाहै ।
बिलकुल नजीक नर्कका, नाला जहाँ बहाहै ॥
जठरअग्निकी गरमी, जो कुछ सुना रहाहै ।
दावा अग्निको शीतल, उससे बता रहाहै ॥
उससे बता रहाहै, फिरभी तो जा रहाहै ।
पडनेको उसी आफतमें, आँसू बहा रहाहै॥१।भ०

जन्मा तो बालपनमें बलहीन हो आयाहै ।
हर बातमें तकने लगा मुहँ माका परायाहै ॥
कुछ कह नहीं सकताथा भूखा कि अघायाहै।
रोनेके सिवा और न हिकमत कोई पायाहै ॥
होकर जवान अबतो दौलत कमा रहाहै ।
अपनी प्रवीणताई सबको दिखा रहाहै ॥
सबको दिखा रहाहै, बातें बना रहाहै ।
नारीके प्रेममें फँस आँसू बहा रहाहै ॥ २ ॥भ०॥
वह चार दिनकी चाँदनी रहकर चली गई ।
ज्वानीके बाद देखिये कैसी दशा भई ॥
शक्ती जो घट गई तो फिर आई नहीं नई।
करने लगे चलनेमें हँसी देखके कई ॥
आकर बुढापा घेर लिया शिर हिला रहाहै ।
लकडी पकडके आगू पगको उठा रहाहै ॥
पगको उठा रहाहै तन थरथरा रहाहै ।
अगले दिनौंको यादकर आँसू बहा रहाहै ३॥भ०॥

अबतो पडीहैं आय बीच धारमें नैया ।
तुम बिन दयाल और कौन पार करैया ॥
वायू बहै विषयकी प्रबल हायरे दैया ।
तृष्णातरंग मोह जाल भवँर डुबैया ॥
घबराके चने नाथ वो नाकों चबा रहाहै ।
मरनेके डरसे अपने, जीको बचा रहाहै ॥
जीको बचा रहाहै, हा हा मचा रहाहै ।
यमके चारित्र सुनके आँसू बहा रहाहै ॥४॥म०॥
साहिब कबीर धीर बीर पीर मिटावो ।
निजदास धर्म्मदासको विश्वास बँधावो ॥
मस्तक पै हाथ धरके सतनाम सुनावो ।
यह जन्म मरण आधि व्याधि फन्द नशावो ॥
चौरासीके चक्करमें फिर फिरके आ रहाहै ।
भवसिन्धुकी धारामें गोते लगा रहाहै ॥
गोते लगा रहाहै, मस्तक झुका रहाहै ।
चरणोंमें अब तुम्हारे आँसू बहा रहाहै॥१७॥म०॥

गजल चेतावनी (राग देश) ।

सतनाम सुमर प्यारे क्या वक्त जा रहाहै ।
मानुष शरीर पाके मुफ्त क्यों गवाँ रहाहै? ॥टे०॥
सुर दुरलभ तन पायकै, तनक न करत विचार।
फिर अवसर अनमोल यह, मिले न दूजी बार॥
जिसको तू कौडियोंकेभावसेलुटा रहाहै।सतना० १
एक स्वास जो जातहै, फिर वह आवत नाहिं ।
सोया तू निःशङ्क होय, कौन भरोसे माहिं ॥
शिरपर तेरे यमराज नगारा बजा रहाहै ॥
सतनाम सुमर प्यारे क्या० ॥ २ ॥
प्रीति करत परिवार सब, निज स्वारथके हेत ।
अन्त समय परलोकमें, कोऊ साथ नहिं देत ॥
जिनके लिये दिनरात मुसीबत उठा रहाहै ॥
सतनाम सुमर प्यारे क्या वक्त जा० ॥ ३ ॥
बहुविधि करि अपराध जिन,तक्यो बिराना माल।

नर्कवासमें होरहा, तिनका कौन हवाल ॥
दुशमन भी जिन्हें देखके आँसू बहा रहाहै ॥
सतनाम सुमर प्यारे क्या वक्त जारहा है ॥ ४ ॥
संगति कारि कोऊ साधुकी, नहिं धोवे उर मैल।
कहें कबीर भटकत फिरे, ज्यों तेलीको बैल ॥
मेरी कही तो बात हवामें उडा रहाहै ॥
सतनाम सुमर प्यारे क्या वक्त जा रहाहै॥५॥१८॥

चेतावनी–उपदेश ।

भजन–ध्वनि बनजारा !

क्या सोया बेचेत मुसाफिर ? क्या सोया बेचेत?।
इस नगरीमें चोर बसत हैं, सर्वस धन हारि लेता॥टे०
मोह निशा अज्ञान अँधेरो, चहुँदिश छायो आय।
तामें स्वपना देखि अनोखा, मूरख रह्यो लुभाय॥१॥
काल खडा शिरपर तेरे, तुझे न तनक विचार ।
ना जानै करलेयगा, कब तेरा पकड अहार?॥२॥

पावँ पसारे तू पऱ्यो, उदय भयो है भोर ।
जाग देख सब चलदिये हैं, तेरे साथी और॥३॥
चेत सबेरे बावरे, फिर :पाछे पछताय ।
तुझको जाना दूर है रे!कहें कबीर जगाय॥४॥१९॥

मनकी दुर्धृष्टता ।

भजन–ध्वनि बनजारा ।

लाख कहों समुझाय सीख मोरी एक न मानैरे॥
यह मन ऐसा बावरा, करै अनोखे काम ।
स्थिर होय कबहूँ लेत नहिं, एकपल प्रभुको नाम॥
हानि अरु लाभ न जानैरे॥सीख मोरी एक न मानैरे॥
कहाँ लग मैं वरणन करूँ, अवगुण भरे अनेक ।
हित अनहित जाने नहीं, अपनी राखत टेक ॥
अमिय विष एकमें सानैरे॥सीख मोरी एक न मा०॥
जहाँ तहाँ मारा फिरै, भली बुरी सब ठौर ॥
जानेको चूकै नहीं, जहाँ लग याकी दौर ॥

रहे नहिं एक ठिकानैरे॥सीख मोरी एक न मानैरे॥
यह मन है बहुरूपिया, कहैं कबीर विचार।
ज्ञानी मूरख बावरा, धारै स्वाँग हजार॥
रार सन्तनसे ठानैरे॥सीख मोरी एक न मानैरे।२०।

चेतावनी-ध्वनि ठुमरी।

यह सुर दुर्लभन पाय दिवाने नाहक क्यों खोता।टे०

श्लोक।

"आक्रान्तं मरणेन जन्म जरयायात्युल्बणं यौवनम्।
सन्तोषो धनलिप्सया शमसुखं प्रौढाङ्गनाविभ्रमैः॥
लोकैर्मत्सरिभिर्गुणा वनभुवो व्यालैर्नृपा दुर्जनै-
रस्थैर्येण विपत्तयोऽप्युपहता ग्रस्तं न किं केन वा॥"
निरभय क्यों तू पावँपसारे,पडापडासोता?॥ १ ॥दि०
"भोगास्तुङ्गतरङ्गभङ्गचपलाः प्राणाः क्षणध्वंसिनः।
स्तोकान्येवदिनानियौवनसुखंस्फूर्तिःक्रियासुस्थिता।
तत्संसारमसारमेव निखिलं बुद्धा बुधा बोधकाः।

लोकानुग्रहपेशलेन मनसा यत्नः समाधीयताम्॥"
करकुछअबविचारनहीं, फिरखावेगागोता २॥दि० ।
"कांश्चित्कल्पशतंकृतस्थितिचयान्कांश्चिद्युगानांशतं
कांश्चिद्वर्षशतं तथा कतिपयाञ्जन्तून्दिनानां शतम् ॥
तांस्तान् कर्मभिरात्मनः प्रतिदिनं संक्षीयमाणायुषः ।
कालोयं कवलीकरोतिसकलान्भ्रातःकुतःकौशलम्"
थोडे दिनके हेत खेत, काँटोंका क्यों बोता? ३॥ दि०
'प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणेसंयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्याप्रदानं युवतिजनकथामूकभावःपरेषाम्
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनयःसर्वभूतानुकम्पा
सामान्यःसर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिःश्रेयसामेष पंथाः'
तूकबीर शरणागतिसतगुरुकीक्यों नहिं होता?॥४॥

सद्‌गुरुने सतमिथ्याकी परीक्षा बताई है ।

गज़ल ।

दुनियाँसे जिसने दिलको हटाया किसीतरे ।
मायाके वशमें फिर न वो आया किसीतरे॥टे०॥

कहनेको सभी कहतेहैं कि हम भी विरागी ।
देखा तो उनमें त्याग न पाया किसीतरे ॥
लाखोंमें सन्त कोई जो देखिके नहीं ।
कंचन औ कामिनीमें लुभाया किसीतरे ॥
पण्डित जो पढके पोथियें, औरोंको सुनाते ।
खुदही हृदय न ज्ञान समाया किसीतरे ॥
कथके पुराण भागवत ईश्वरके भेदको ।
ऋषियोंने भी न ठीक जनाया किसीतरे ॥
वक्ता जो धर्म्मशास्त्रके मन्वादि होगये ।
आपुसमें जुदा गीत है गाया किसीतरे ॥
वेदोंके अर्थका भी यही हाल है सबने ।
अपनेही मतके तर्फ झुकाया किसीतरे ॥
ऐसा जहांमें कौन जो सतपंथ बतावे ।
पर हां ! कबीरने तो लखाया किसीतरे ॥२२॥

सद्गुरुने अविद्याका रूप और अविद्याका प्रभाव इसप्रकार बताया है ।

गज़ल ।

देखिये! कैसा अविद्याने अजब धोखा दिया। झूंठको
सच दुःखको सुख, विपरीत बोध करादिया ॥टेक॥
जिसको निरगुण निराकार निरीह कहतीहैं श्रुती।
उस अमूरत दिब्यकी सूरत भी जड बनवादिया॥
शास्त्र कहतेहैं सभीके आतमा है ज्ञानवान ।
उसके ऊपर सरबरस अपने असरको जमादिया॥
जगतके नश्वर पदारथ जो हैं परिणामी सदा ।
तिनके लालचमें फँसा जीवोंको भी बहँकादिया॥
मनुषतन जिसके लिये सब तडफतेहैं देवता ।
उसकी बेकदरी करा पायेको मुफ्त खोवादिया ॥
जो कि फूले फिरतेहैंगे धर्मके अगुवा बने ।
उनको निज कर्तव्यसे बिलकुल विमुख करवादिया॥
पण्डितोंके ढंग कुछ ऐसे किये बरबाद हैं ।
स्वारथी सबको बना सत्कर्म उनसे छुड़ादिया ॥

कहांतक इसके अनर्थोंकी कथा कोई कहे ।
बहुत कुछ थोडेहीमें कब्बीरने समझा दिया॥२३॥

चेतावनी-गजल ।

बनैजो कुछ धरम करले यही एक साथ जावेगा।टे०
गया अवसर न तेरे फिर ये हरगिज हाथ आवेगा॥
दिवाना बनके दुनियांमें समय अनमोल खोताहै।
दिये लाखोंकी दौलत भी न पल रहने तू पावेगा॥
धरी रहजायगी तेरी अकड सारी ठिकानेपर ।
जब आके यम जकड गरदन पकडकर धर दबावेगा।
कुटुम परिवार सुत कोई सहायक होगा ना कोई।
तेरे पापोंकी गठड़ी खुद तुही शिरपर उठावेगा॥
गरभमें था कहा तूने, न भूलूंगा प्रभू तुझको ।
भला तू जायके अपना उसे क्या मू दिखावेगा॥
तुझे तो घरसे जङ्गलमें, तेराही खुदबखुद बेटा ।
सुलाके लकडियोंके ढेरमें तुझको जलावेगा ॥

कहें कब्बीर समुझाई, तू कहना मानले भाई ।
नहीं तो अपनी ठकुराई वृथा सारी गमावेगा २४

चेतावनी-गजल ।

चोरी प्रभूके करके छिपावोगे किसतरे ।
अपनी सचाई इसको दिखावोगे किसतरे॥टे०॥
हरएक जगेमें हरदम रहताहै वो हाजिर ।
उससे ये अँधाधुन्ध चलावोगे किसतरे ॥
दुनियाँकी दोनों आँखमें तो धूल डालते ।
आँखें हजार उसकी बचावोगे किसतरे ॥
जो कुछ कियाहै तुमने पाप जान बूझके ।
अपराध उसका माफ करावोगे किसतरे॥
ज्ञानी जो है त्रिकालका घटघटकी जानता ।
बातें असत्य उससे बनावोगे किसतरे ॥
जबतक नहीं करोगे तुम कहना कबीरका ।
तबतक दुखोंसे पिंड छुडावोगे किसतरे ॥२५॥

चेतावनी-गजल।

प्रभुके चरणमें ध्यान लगाया करो कभी।
परलोक अपना कुछ तो बनाया करो कभी॥टेक॥
आठों पहर परपंचमें जातेहैं तुम्हारे।
एकपल तो गुण गुरूका भी गाया करो कभी॥
आखिरको ये संसार छूट जायगा तुमसे।
तुमभी तो इसको दिलसे हटाया करो कभी॥
लैलै कियाहै तुमने जमा धनको जोडके।
देनेको भी कुछ हाथ उठाया करो कभी॥
जबतक हृदयमें बनसके तबतक जरा दया।
दुखियोंके तरफ देखके लाया करो कभी॥
तृष्णा तो कर रहीहै प्रबलतासे अपना राज।
सन्तोषको भी ठौर दिलाया करो कभी॥
मायाके वशमें पडके जो रहताहै दिवाना
इस मनको अपने ज्ञान दृढाया करो कभी॥

स्वारथके लिये तो सदा फिरतेहो भटकते ।
सन्तोंके भी सतसंगमें जाया करो कभी ॥
है हितका तुम्हारेही ये कहना कबीरका ।
इसको न अपने दिलसे भुलाया करो कभी२६॥

चेतावनी-गजल सिकिस्ता ।

पडे अविद्यामें सोनेवालो,
खुलेंगी आँखें तुम्हारी कबतक ।
शरणमें आनेको सद्गुरूकी,
करोगे अपनी तयारी कबतक ॥ टे० ॥
गया न बचपन वो खेल बिन है,
चढी जवानी ये चार दिन है ।
समय बुढापेका फिर कठिन है,
रहोगे ऐसे अनारी कबतक ॥
अजब अटारी औ चित्रसारी,
मिली मनोहर है तुमको नारी ।

बढी है दौलतकी जो खुमारी,
रहेगी ऐसीही जारी कबतक ॥
जो यज्ञ आदिक हैं कर्म नाना,
फलहै इन्होंका सुख स्वर्ग पाना ।
मिटे न इनसे भव आना जाना,
सहोगे संकट ये भारी कबतक ॥
कबीर तो कहते हैं पुकारी,
मगर तुम्हींको है अखतियारी ॥
सुनो अगर ना सुनो हमारी,
बनोगे सच्चे विचारी कबतक ॥ २७ ॥

चेतावनी-भजन-ठुमरी ।

हाँ ! नर जन्म पाय कह कीन्होरे ।
कबहुँ न एक पल स्वपनेहु मूरख,
प्रभुको नाम तू लीनोरे ॥ टे० ॥

स्वारथ कारण चहुँदिशि धायो,
परमारथ कुछ नहिं बन आयो।
का भयो जो बहु संपति पायो,
अपनो उदर भर लीनोरे॥ हाँ०॥
स्वान समान विषय लपटाना,
तृष्णाके वश फिरयो दिवाना।
नीच मीच शिरपर नहिं जाना,
ऐसो मतिको हीनोरे॥ हाँ न०॥
बालपना सब खेलि गमायो,
तरुण भयो लखि तिय ललचायो।
वृद्ध भयो मनमें पछितायो,
खोयदिये पन तीनोरे॥ हाँ न०॥
तजि प्रपंच जगकी चतुराई,
गहु गुरुचरण शरण सुखदाई।
कहैं कबीर सुनो तुम भाई,
है कितने दिन जीनोरे॥ हाँ०॥ २८॥

संसारी लोगोंकी विचारशून्यतापर उपदेश ।

गजल ।

गुरू सद्ग्रन्थ सम्मत पन्थ, बतलाता जो ज्ञानी है।
न माने बातको उसकी, बने आपी सयानी है ॥
पटकती शिर वहाँ जाकर, जहाँ पत्थर औ पानी है।
न समझाये जरा समझे, अजब दुनियाँ दिवानीहै॥
दोहा—साँचेसे भागी फिरे, झूठेको पतियाय ।
ऐसी निपट अजानको, काह कहूँ समुझाय ॥
मिल्गन—पडी मायाके फन्देमें,
सरासर ये भुलानी है ॥ टे० ॥ न समझा० ॥
गढी जो अपने हाथोंसे, प्रभूने नव महीनेमें ।
बनाके मूरती सुन्दर, है बैठा आप सीनेमें ॥
न कोई पूजता उसको, लगे मृग जलके पीनेमें।
भटकते द्वारका काशी, फिरे मक्का मदीनेमें ॥

दोहा–भली माँग कूएँ परी, कोई न करे विचार।
जड मूरत पूजत फिरे, तजि चेतन करतार॥
मिलान–अकलकी आँखसे देखो,
कि कैसी ये नदानी है॥ न समझा० ॥
कभी हरद्वार रामेश्वर, कभी गिरनारको जाती।
वहाँ पूछे न कोई बात, तो फिर लौट घर आती॥
जो है हाजिर हमेशा पासमें उसको न पतियाती।
बियाँबाँ जंगलोंमें ढूँढ, गोते दर बदर खाती॥
दोहा–जा कारण बनबन फिरे, सो बैठा घट माहिं।
वस्तु कहीं खोजै कहीं, कैसे पावै ताहिं॥
मि० न जानूँयेकहाँसेआकेकैसी धुनसमानीहै। न स०
विचारो सत्य मिथ्याको, अहितहित अपनापहिचानो
करो सतसंग सन्तोंका, यथारथ बातको मानो॥
पकडकर पक्ष मिथ्याका, वृथा बकवाद मत ठानो।
सकल संसारके प्राणीको, अपनी आतमा जानो॥

दोहा—सब घट मेरा साइयाँ, सूनी सेज न कोय!
बलिहारी घट तासुकी, जाघट परगट होय ॥
मिलान—कहें कब्बीर सुन लेना,
यही सन्तोंकी बानी है।
न समझाये जरा समझे,
अजब दुनियां दिवानी है॥ २९ ॥

प्रमाद छुडानेके लिये प्रश्नोंके द्वारा उपदेश।

गजल।

कौन कहताहै कि जालिमकी उमर कोता नहीं।
नेक कामोंका कहो क्या नेक फल होता नहीं॥टे०॥
लासकेगा वो कहांसे भूखमें खानेको धान।
जो कोई किस्सान अपने खेतको बोता नहीं॥
छल कपटसे जोडके करता है जो धनको जमा।
कुछ दिनोंमें क्या वो सब जडमूलसे खोता नहीं॥
जो कोई करताहै नाहकको हरएकसे दुश्मनी॥

वो कभी दुनियांमें सुखसे नींदभर सोता नहीं ॥
पाप जिसने हैं कमाये अपनी सारी उम्रमें ।
नर्कमें जाके वो क्या पछताके फिर रोता नहीं ॥
देवदुर्लभ पाके तन जो व्यर्थ खोताहै कबीर ।
क्या वो फिर फिर खायगाभवसिंधुमेंगोता नहीं ३०

सद्गुरुका माहात्म्य ।

दादरा सिन्ध भैरवी ।

जिन सतगुरु पहिचाना नहीं,
तिनको तिहुँलोक ठिकाना नहीं ॥ टे० ॥
सो नर खर कूकर सम जानो,
जेहि घट ज्ञान समाना नहीं ॥ जिन० ॥
दिनभरमें जो फिर घर आवे,
ताको तो कहत भुलाना नहीं ॥ जि० ॥
अपने भक्तको जो नहिं तारे,
ऐसा वो साहेब दिवाना नहीं ॥ जि० ॥

कहैं कबीर सत्य है वह पद,
जहां फिर जाना औ आना नहीं॥जि०॥२१॥

सद्गुरुकी प्रार्थना।

दादरा (उपरोक्तचालका)

आपीका हैगा सहारा हमें॥
कोई दीखे न दूजा हमारा हमें॥ टे०॥
गर्भ यातनाके संकटसे,
करके कृपा जो उबारा हमें॥ आपी०॥
दाँत न थे जब दूध दियो तब,
फिरभी कभी न बिसारा हमें॥ आ०॥
सदा रहो साथी घट भीतर,
पलभर भी करते न न्यारा हमें॥ आ०॥
जो कुछ सुख तुम देहु दयाकारि,
क्या कोई देवेगा बिचारा हमें॥ आ०॥
धर्म्मदास कहे भव वारिधसे,
पार कबीर उतारा हमें॥ आपी०॥ २२॥

संसारी जीवोंकी धृष्टता ।

पुनः वही चाल ।

माने न कोई हमारा कहा,
मृगतृष्णाकी धारा जग सारा बहा ॥ टे० ॥
सतशास्त्रनकी सीख सुनत नहिं,
करत रहत निज मनको चहा ॥ मा० ॥
यद्यपि बहु उपदेश दृढाऊँ,
तद्यपि जैसेका तैसा रहा ॥ माने० ॥
चौरासी योनिनमें परिके,
भटकि २ दुख नाना सहा ॥ माने० ॥
शुचि सन्तोष त्यागि चिन्तामणि,
उपल विषय सुख चाहे गहा ॥ मा० ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
ऐसा ये हैगा अनारी महा ॥ मा० ॥ ३३ ॥

मनकी दशा।

दादरा।

कैसे समझाऊँ मैं न माने मोरी बात रे ॥ टे० ॥
यह मन मूढ मधुर अमृत तजि,
गटकि गटकि कटु विष फल खात रे ॥ कैसे० ॥
एकपल होय थिर न रहत न कबहूं,
सटकि सटकि भागो चहुँदिशि जात रे ॥कैसे०॥
जो मैं रोकि तनक कहुँ राखों,
पटकि पटकि अति अकुलातरे ॥ कैसे० ॥
कहैं कबीर सन्त मेटत हैं,
हटकि हटकि याके सब उतपातरे ॥कैसे०॥३४॥

संसारी लोगोंकी दसा।

दादरा।

मोरी कही ना माने रे ! नहिं माने ये मूढ गवाँर।
मोरी कही० ॥ मैं कैसे कहूं समुझाय? ॥ टे० ॥

झूठेको विश्वास करतहै ।
साँचे नहीं पतियाय ॥ मोरी कही० ॥
आतम त्यागि अनातम पूजत ।
मूरख शीश नवाय ॥ मोरी कही० ॥
सज्जन सङ्ग विमल गंगाजल ।
तेहि तजि तीरथ जाय ॥ मोरी० ॥
अपनो हित अनहित नहीं सूझै ।
रही अविद्या छाय ॥ मोरी कही० ॥
कहैं कबीर प्रत्यक्ष न माने ।
ताकौ कौन उपाय ॥ मोरी कही० ॥ ३९ ॥

विषयोंका त्याग ।

गजल ।

जबतलक विषयोंसे ये दिल दूर हो जाता नहीं ।
तबतलक साधक विचारा सत्य सुख पाता नहीं। टे०
जो नहीं एकाग्र कर सकता है अपनी वृत्तियें ।

उसको स्वप्नेमें भी परमातम् नजर आता नहीं १॥
क्या हुआ वेदोंके पढनेसे न पाया भेद कुछ ।
आत्मा जाने बिना ज्ञानी तो कहलाता नहीं ॥२॥
पाप कर्मोंसे सदा रहताहै जिसका मन मलीन ।
उसके सदउपदेश यह हरगिज हृदय भाता नहीं ३
ध्यानसे इसको सुनो जो कह रहे हैंगे कबीर ।
है विना सद्गुरुके कोई मुक्तिका दाता नहीं॥४॥३६

पराविद्याका उपदेश ।

गजल ।

कहना सन्तोंका है जो कुछ जरा सुनो तो सही ।
है सरासर वही विद्या परा सुनो तो सही ॥ टे० ॥
नाना मतपन्थ जो दुनियाँमें हैं न्यारे न्यारे ।
परखो इनमेंसे कौनहै खरा सुनो तो सही ॥ १ ॥
वेद अरु शास्त्र पुराणोंको अगर पढभी लिया ।
बिन सद्गुरुके उनमें क्या धरा सुनो तो सही॥२॥

योग जप दान ज्ञान ध्यान उसके धूर सभी ।
जिसके अभिमान न मनसे मरा सुनो तो सही३॥
जिसने संसारका उपकार न थोडा भी किया ।
उसने घरवारको तज क्या करा सुनो तो सही४॥
देखो उपदेश ये कबीरका कैसा अच्छा ।
सत्य सिद्धान्त है इसमें भरा सुनो तो सही५॥३७

अन्यकुटुम्बी लोगोंसे सद्गुरुकी श्रेष्ठता ।

कव्वाली ।

सद्गुरु फकत जगतमें, दुखको छुडानेवाले ।
भवसिन्धुमें कुटुमके, सब हैं डुबानेवाले ॥ टे० ॥
माता पिता तुम्हारे, तिरिया औ सुत विचारे ।
स्वारथको अपने सारे, नाता लगानेवाले ॥ १ ॥
अब तो सगे घनेरे, कहताहै जिनको मेरे ।
आखिरको कोई तेरे, नहिं काम आनेवाले ॥ २ ॥
यमके पडेगा पाले, मुसकें जकडके ताने ।

कोई न उस ठिकाने, होंगे बचानेवाले ॥ ३ ॥
पाके मनुष्य तनको, करले पवित्र मनको ।
फूले न देख धनको, दौलत कमानेवाले ॥ ४ ॥
सुनले ये बात नीकी, प्यारे कबीरजीकी ।
भक्तीसे उसधनीकी, अयमुंह छिपानेवाले॥५॥३८

चेतावनी-कव्वाली ।

प्यारे प्रपंचमें तो दिन रात तुम गुजारो ।
मानुष्यका तन ये पाके, कुछ तो जराविचारो॥टे०
दो दिनका है बसेरा, करतेहो मेरा मेरा ।
सब छोड अपनाडेरा, खाली गये हजारों ॥ १ ॥
आशाकी पाश पागे, तृष्णाके पीछे लागे ।
फिरतेहो क्यों अभागे, सन्तोष दिलमें धारो ॥२॥
देवेगा सोई पावे, और कुछ न काम आवे ।
एक धर्म्म साथ जावे, यह बात मत बिसारो॥३॥
कहते कबीर ज्ञानी, संसार है ये फानी ।
तजिअपनीसबनदानी, ममताऔमदकोमारो४।३९

साधुवोंका कर्तव्य ।

कव्वाली ।

साधूका वेष धरके, ज्ञानी जो तुम कहावो ।
अतिशय उदार अपना, अन्तःकरणबनावो ॥टे०॥
कर्त्तव्य अपना पालो, यम नियमको सँभालो ।
दुरमतिको दूर टालो, सुकृत सदा कमावो ॥१॥
एक सत्यव्रत धारी, कामादि रिपु निवारी ।
बनि शुद्ध ब्रह्मचारी, विषयोंसे मन हटावो ॥२॥
पैसा न पास जोड़ो, आशा जगतकी छोड़ो ।
तृष्णासे मुखको मोड़ो, मायामें मत लुभावो ॥३॥
निज कर्म्मकी कमाई, यह तिल घटे न राई ।
सुख दुखको पाय भाई, मत धैर्य्यको डिगावो॥४॥
उपकारको सभीके, करलो विचार जीके ।
भूल कर भी न किसीके, दिलको कभी दुखावो५॥
विषका न स्वाद चाखो, मुखसे न झूठ भाखो ।

जीवोंपै दया राखो, उपदेश सद्धावो ॥ ६ ॥
फिरते हो क्यों भुलाने, बिन गुरु कबीर जाने।
पढ़पढ़के पोथियाने, बकवाद मत बढावो॥७॥४०॥

चेतावनी-भजन राग बनजारा ।

जगमेंजीवनदिनचारी।नहिंदेखे आख उघारी॥टे०॥
निशिदिन तृष्णावश धावे,नानाविधि कष्ट उठावे ।
पर वैभव लखि ललचावे,बिन भाग्य नहीं कुछ पावे॥
दोहा–विषयवासनामें फस्यो,उरझि रह्यो दिनरात।
कबहूँ ज्ञानकी बात इक,स्वप्नेहु नाहिं सुहात।
गई मति मारी । नहिं देखे आख उघारी॥
खोटेको खराबताई,बहुभांतिकीकरिचतुराई।
छलकपटसेकरे ठगाई,धन संचयबातबनाई॥
दोहा–धरी रहे सम्पत्ति यहीं,जाय न कौडीसाथ ।
बनै सो करिले पुण्य कुछ,अबहीं अपनेहाथ॥

हृदयमें विचारी, नहिं देखे आख उघारी ॥
सुखसाज आजबहुपायो, तिय सुतसेमोह बढायो॥
जिन सब संयोगमिलायो, ता प्रभुकीसुधिविसरायो॥
दोहा–भ्रमतजुभजुसतनामको, सतगुरु शरणेआय।
वृथा गमावे मूढ क्यों ? ऐसो नरतन पाय॥
अविद्या धारी, नहिं देखे आख उघारी॥
अजहूँलेमानिअयाने, जो कहते हैं सन्तसयाने
जबपडेगा यमकेपाने, तबक्याहोगापछताने॥
दोहा–फिर यह अवसरनामिले, कीन्हेकोटिउपाय ।
ता कारणबहुबार शठ, तोहिं कह्योंसमुझाय॥
कबीरपुकारी, नहिंदेखे आख उघारी ॥४१॥

कबीरपंथी होनेमें कठिनता अर्थात् सच्चे कबीरपंथियोंके नियम ।

गज़ल ।

– आना कबीर पंथमें खालाका घर नहीं ।

आतेहैं शूर नर जिन्हें दुनियाका डर नहीं ॥टे०॥
चोरी औ झूठ त्यागकर सच्चे सदा रहें।
डालें पराई नारिपर हरगिज नजर नहीं ॥
उपदेश तो करतेहैं सभी पाप न करना।
सुनतेहैं अपने कान आप खुद मगर नहीं ॥
बालक जो आयकर कहे वाजिब जो कोई बात।
उसकी भी माननेमें है उनको उजर नहीं ॥
रुतबा व माल धनपै जो करताहै कुछ गरूर।
उसका तो इस धरममें जराभर गुजर नहीं ॥
कहतेहैं धरमदास साफ २ ये सबसे।
मुक्तीका और ठौर कहीं सर बसर नहीं॥४२॥

धर्मदास साहबसे इनके पहिलेके गुरुने पूछा कि तुम्हारा शिष्य होकर हमारे धर्मानुसारसे पूजा क्यों नहीं करताहै इसपर धर्मदास साहबने यह पद गाया।

भजन ।

हैं मेरे गुरु करुणासिन्धु कबीर ।
अशरणशरणकरणमुदमंगल, हरणसकलभवपीर। टे.
जीव उधारण कारण प्रगटे, जगमें धारि शरीर ।
मीर बजीर देखि भय मानै, फक्कर वेष फकीर ॥
शाह सिकन्दरकसनी लीना, बहुविधि कारि तदबीर।
नहिंबसचल्योहारितबचरणन, आपपन्यो आखीर॥
वीर वघेलाके सतगुरुहैं, बिजलीखांके पीर ।
हिन्दू मुसलमान दोनोंको, तोडी भरम जँजीर॥
धरमदास कहै और कौन है? अस समरथ मतिधीर।
मगहर सूखी नदी बहायो, आमी अमृत नीर ४३॥

संसारी लोगोंकी दशा ।

ठुमरी ।

मैं कासे कहूँ कोई न माने कही ।
बिन सतनामभजन यहबिरथा, आयूजायरही टे०॥

आतमत्यागि पषाणहिं पूजे, धारि दुलहादुलही ।
किरतम आगे :करतानाचै, है अन्धेर यही ॥
शुपको मारि यज्ञमें होमैं, निजस्वारथ अबहीं ।
इकदिन तुमसे आय अचानक, बदलालेय सही ॥
पाप कर्म करि सुखको चाहे, यह कैसे निबही ।
पार उतरना चहे सिन्धुके, स्वानकी पूंछ गही ॥
कहैं कबीर कहूँ मैं को कुछ, मानो हवा बही ।
कोई न सुनेकही जगमेरी, कहि हाऱ्यो सबही ४४॥

चेतावनी-भजन ।

कब भजिहो सतनाम ॥
सो मेरे मन ! कब भजिहो सतनाम ॥ टे० ॥
बालपना सब खेलि गमायो ज्वानीमें व्याप्यो काम।
वृद्ध भये तन काँपन लागे लटकन लाग्यो चाम ॥
लाठी टेकि चलत मारगमें सह्यो जात नहिं घाम।
कानन बहिर नयन नहिं सूझे दाँत भये बेकाम ॥
घरकी नारि विमुख होय बैठी, पुत्र करत बदनाम।

बरबरातहै विरथा बूढा, अटपट आठो जाम ॥
खटियासे भुइंपर करि देहैं, छुटि जैहैं धन धाम ।
कहें कबीर काह तब करिहो, परिहै यमसे काम ४ ५॥

उपदेश-गजल ध्वनि जिला ।

तजि सकल तदबीर एक कबीरको ध्याया करो ।
होके दीन अधीन सन्तोंके निकट आया करो॥टे०॥
फूल फल परसाद थोडा बहुत बहुत श्रद्धाके सहित ।
बनसके जो कुछ, सो उनकी भेंटको लाया करो ॥
धरके सन्मुख उनके, अपने हाथ दोनों जोडकर ।
अदतसे अभिमान तजि, चरणोंमें शिर नाया करो॥
सुनिके उपदेशोंको उनके, मननकर फिर बार बार।
निदिध्यासन करके उसको, काममें लाया करो ॥
दम्बदम् कर याद वह, धर्म्मदास उठते बैठते ।
सत्य साहिब, सत्यसाहिब, कहकेगुणगाया करो ४ ६

मालिककी पहचान करना ।

गजल ध्वनि पीलू ।

जगत् जिसका ये कुल बनाया हुआहै ।
वही सब घटोंमें समाया हुआहै ॥ टे० ॥
नहीं दूसरा कोई है उससे न्यारा ।
वो अपनेमें आपी भुलाया हुआहै ॥
हरएकशै जो हैगी, वो रङ्गीं बरङ्गी ।
ये जलवा उसीका दिखाया हुआहै ॥
उसीकी अकलमें, ये आतीहैं बातें ।
शरण सद्गुरुकी जो आया हुआहै ॥
है ताकत उसीमेंही मू खोलनेकी ।
जो कुछ भेद सन्तोंसे पाया हुआहै ॥
धरमदास अपनी, उसीकी फिकरमें ।
करोडोंकी दौलत, लुटाया हुआहै ॥ ४७ ॥

कबीर साहबकी विशेषता ।

गजल ।

धन्य कब्बीर ! कुछ जलवा, दिखाना हो तो ऐसाहो!
बिना मा बापके दुनियाँमें, आना हो तोऐसाहो॥टे०॥
उतर अस्मानसे एक नूरका, गोला कमलदल पर।
वो आके बन गया बालक, बहाना हो तो ऐसाहो॥
कहूँ क्या ढंग गंगाके, किनारे शिष्य होनेका ।
जो रामानन्द स्वामीको, भुलाना हो तो ऐसाहो ॥
छुडाकर ढोंग दुनियाका, सत्य उपदेश देतेथे ।
सरे मैदान गर डंका, बजाना हो तो ऐसाहो ॥
बहस करनेको पण्डित मोलवी सब पासमें आये ।
भये सरमिन्दे आपी खुद, हराना हो तो ऐसाहो ॥
सुनाके ज्ञान निरबानी, किया दोऊ दीनको चेला।
अगर संसारमें सतगुरु, कहाना हो तो ऐसाहो ॥
हजारों बैल भरके धान, केशव भेंटको लाया ।

रखा नहिं एक दानागर, लुटाना हो तो ऐसाहो ॥
किया सद्धर्म्मका परचार, पहले पहल काशीमें ।
बिना भक्तीके मुक्तीका, ठिकाना हो तो ऐसाहो ॥
छोड़कर फूल और तुलसी, गये सादेह निज घरको ।
परम अवतार इस जगसे, रवाना हो तो ऐसाहो ॥
बचाया हिंसकोंके हाथसे हिन्दू धरम साबित ।
कहें धर्मदास गहरी जड, जमाना हो तो ऐसाहो ४८ ॥

मालिकका प्रगट होना ।

गजल ध्वनि कहरवा ।

कृपा करनेको भक्तोंपर, प्रभू सतलोकसे आये ।
कमलदलपर प्रकटकाशीमेंहोकब्बीरकहवाये॥टे०॥
बनाके वेष साधूका लगे फिरने घरों घरमें ।
कहें हमसे करो चरचा, ये सुन विद्वान घबराये ॥
चली नहिं और कुछ युक्ती, तौ सब पंडित लगेकहने।
बतावो ये हमें पहले, कि दीक्षा किससे तुम लाये।

न हरगिज ज्ञान दुनियामें, कभी परमान होताहै।
विना कोई गुरूके पास, जाकर कान फुँकवाये ॥
ये सुन कौतुक किया ऐसा, धन्योलघु रूपबालकका।
जाय गंगाकिनारे घाटपर सोयेथे शिरनाये ॥
नहानेके समय जानेमें, रामानन्द स्वामीकी ;
खडाऊँ आलगी शिरमें तो दैया ! कहके चिल्लाये ॥
दयालु सन्त थे स्वामी, उठाकर गोदमें बोले।
भजो श्रीराम मति रोवो मिटे दुख हरिका गुणगाये॥
करी ऐसी कई लीला, कहाँतक कहसके कोई।
मुक्ति धर्म्मदास है जगमें उन्हींकी शरणमें जाये४९

प्रेमके मार्गमें चलनेकी कठिनता।

भजन।

प्रेमका मारग बाँकारे। वह जानतहै भयो शीश
प्रेममें अर्पण जाकारे ॥ टे० ॥
यहतो घर है प्रेमका, खालाका घर नाहिं।

शीश काट चरणन धरै, तब पैठे घरमाहिं ॥
दैखि कायर मन साँकारे, प्रेमका मारग बाँकारे ॥
प्रेम पियाला जो पिये, शीश दक्षिणा देय ।
लोभी शीश न देसके, नाम प्रेमका लेय ॥
नहीं वह प्रेमी याकारे, प्रेमका मारग बांकारे ॥
प्रेम न बाडी उपजै, प्रेम न हाट विकाय ॥
राजा रानी जो चहै, सिर सांटे लै जाय ।
मिलै तेहि मुक्तिका नाकारे, प्रेमका मारग बाँकारे॥
जोगी जङ्गम सेवडा, संन्यासी दरवेष ।
प्रेम बिना पहुँचे नहीं, दुर्लभ सतगुरुदेश ॥
शेष जेहि वरणत थाकारे, प्रेमका मारग बाँकारे
प्रेम पियाला नामका, चाखत अधिक रसाल ॥
कबीर पीना कठिनहै, मागै शीश कलाल ।
क्या वो तेरा बाबा काकारे, प्रेमका मारग बाँकारे ९

भजन ।

भक्तिका मारग झीनारे !
कोइ जाने जाननहार, सन्तजन जो परबीनारे॥टे०
नहीं अचाह चाह कुछ उरमें, मन लौलीनारे ।
साधुनकी संगतमें निशदिन रहता भीनारे ॥
शब्दमें सुरति बसे इमि जैसे, जल बिच मीनारे ।
जल बिछुरे ततकाल होत, जिमि कमल मलीनारे॥
धन कुलका अभिमान त्यागकारि, रहे अधीनारे ।
परमारथके हेत देत शिर, बिलम न कीनारे ॥
धारण करी सन्तोष सदा, अमृतरस पीनारे ।
भक्तरहनि कबीर सकल, परगट कह दीनारे९१॥

अध्यात्म ज्ञानके-भजन ।

बागों मत जारे ! तेरी कायामें गुलजार ॥ टे० ॥
करनी क्यारी बोयकै, रहनी रखु रखवार ।
कपटको काग उडायके देखो अजब बहार॥बा०॥

मन माली परबोधिये, कारि संयमको बार ।
दया वृक्ष सूझे नहीं, सींच क्षमा जल ढार ॥बा०
गुलक्यारीके बीचमें, फूल रहा कचनार ।
खिला गुलाबी अजब रंग, गुल गुलाबकी डार ॥
अष्ट कमलसे होतहै, लीला अगम अपार ।
कहें कबीर चित चेतके, आवागवन निवार॥१२॥

भजन ।

अबधू अँधाधुन्ध अँधियारा ।
कोई जानेगा जानन हारा ॥ टे० ॥
या घट भीतर बन अरु बस्ती, याहीमें झाड पहारा।
या घट भीतर बाग बगीचा, याहीमें सींचन हारा॥
या घट भीतर सोना चाँदी, याहीमें लगी बजारा।
या घट भीतर हीरा मोती, याहीमें परखन हारा ॥
या घट भीतर सात समुन्दर, याहीमें नदियानारा।
या घट भीतर सूरज चन्दा, याहीमें नौलख तारा॥

या घट भीतरबिजली चमके, याहीमें होय उजियारा।
या घट भीतर अनहद गरजै, वरषै अमृत धारा ॥
या घट भीतर देवी देवा, याहीमें ठाकुर द्वारा ।
या घट भीतर काशी मथुरा, याहीमें गढ गिरनारा॥
या घट भीतर ब्रह्मा विष्णु, शिव सनकादि अपारा।
या घट भीतर आय लेतहैं, राम कृष्ण अवतारा ॥
या घट भीतर काम धेनु है, कल्पवृक्ष इकन्यारा ।
या घट भीतर ऋद्धि सिद्धिके, भरे अटलभण्डारा॥
या घट भीतर तीन लोक हैं, याहीमें है करतारा॥
कहैं कबीरसुनोभाई साधो, याहीमें गुरु हमारा॥९३॥

भजन ।

सौदा करै सो जानै, कायागढ खूब बजार ॥टे०॥
या कायामें हाट लगाये, बैठे साहूकार ।
या कायामें चोर फिरतहैं, लुचे ढीठ लबार ॥
या कायामें लाल जवाहिर, रत्नकी खानि अपार ।

या कायामें हीरा मोती, परखै परखन हार ॥
या कायामें वेद पाठकारि, पण्डित करैं विचार ।
या कायामें काजी मुलना, देवै बांग पुकार ॥
या कायामें धनी विराजै, तिनका ओट पहार ।
कहेंकबीरसुनोभाईसाधो,गुरुबिनजगअंधियार ९४

भजन ।

बिन सतगुरु नर फिरत भुलाना,
खोजत फिरत न मिलत ठिकाना ॥ टे० ॥
केहरिसुत इक लाय गडरिया,
पालि पोषि तेहि कियो सयाना ।
करत किलोल चरत अजयन संग,
आपन मर्म नहीं उन जाना ॥
मृगपति और जंगलसे आयो,
ताहि देखि वह बहुत डराना ।
पकरि भेद ताने समुझायो,

आपनि दशा देखि मुसकाना ॥
जैसे मृगा नाभि कस्तूरी,
खोजत मूढ फिरे चौगाना।
व्याकुल होय मनहि मन सोचे,
यह सुगंध कहु कहां बसाना ॥
गुरु प्रताप निजरूप दिखानो,
सो आनन्द नहिं जात बखाना।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो !,
उलटिके आपमें आप समाना ॥ ९९ ॥

भजन।

परम प्रभु अपनेही उर पायो।
जुगन जुगनकी मिटी कलपना,
सतगुरु भेद बतायो ॥ टे० ॥
जैसे कुवारि कण्ठ मणि भूषण,
जान्यो कहूँ गमायो।

काहू सखीने आय बतायो,
मनको भरम नशायो ॥
ज्यों तिरिया स्वपने सुत खोयो,
जानिकै जिय अकुलायो।
जागि परी पलंगापर पायो,
ना कहु गयो न आयो ॥
मिरगा पास बसे कस्तूरी,
ढूंढत बन बन धायो।
उलटि सुगन्ध नाभिकी लीनी,
स्थिर होयकै सकुचायो ॥
कहैं कबीर भई है वह गति,
ज्यों गूंगे गुरु खायो।
ताका स्वाद कहै कहु कैसे?,
मनही मन मुसकायो ॥ ५६ ॥

भजन।

सन्तो! सो सतगुरु मोहिं भावै,

जो आवागवन मिटावै ॥ टे० ॥
डोलत डिगे न बोलत बिसरे,
अस उपदेश दृढावै ।
बिन श्रम हठ किरियासे न्यारी,
सहज समाधि लगावै ॥
द्वार निरोधि पवन नहिं रोकै,
नहिं अनहद उरझावै ।
यह मन जहां जाय तहां निरभय,
समतासे ठहरावै ॥
कर्म करै सब रहै अकर्मी,
ऐसी युक्ति बतावै ।
सदा अनन्द फन्दसे न्यारा ॥
भोगमें योग सिखावै ।
तजि धरती आकाश अधरमें,
प्रेम मडैया छावै ॥

ज्ञान शिखरकी मुक्ति सिलपर,
आसन अचल जमावै ॥
भीतर बाहर एकहि देखे,
दूजा भाव मिटावै।
कहैं कबीर सोई गुरु पूरा,
घट बिच अलख लखावै ॥ ५७ ॥

भजन।

सन्तोमूलभेदकुछ न्यारा, कोईबिरलाजाननहारा।टे०
मूड़मुडाय भयो कह धारे, जटाजूट शिर भारा।
कहा भयो पशुसम नग्न फिरै बन, अङ्ग लगाये छारा॥
कहा भयो कन्द मूल फल खाये, वायू किये अहारा।
शीतउष्ण जल क्षुधा तृषासहि, तन जीरन करिडारा
साँप छोडि बामीको कूटे, अचरज खेल पसारा ॥
धोबिसे बस चले नहीं कछु, गदहा काह बिगारा॥

योग यज्ञ जप तप संयम व्रत, क्रिया कर्म विस्तारा ॥
तीरथ मूरति सेवा पूजा, ये उरले व्यवहारा ।
हरि हर ब्रह्मा खोजत हारे, धरिधरि जग अवतारा॥
पोथी पानामें क्या ढूंढे, वेद नेति कहि हारा।
बिन गुरु भक्ति भेद नहिं पावै भरमि मरे संसारा ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मानो कहा हमारा ९८॥

भजन ।

सन्तो ! जीवतही करु आसा ।
मुये मुक्ति गुरु कहैं स्वारथी,
झूंठा दै विश्वासा ॥ टे० ॥
जीवत समझे जीवत बूझे,
जीयत होय भ्रम नाशा ।
जियत मुक्त जो भये मिले तेहि,
मूयेहु मुक्ति निवासा ॥
मनहीसे बन्धन मनहीसे मुक्ती,

मनहीका सकल विलासा ।
जो मन भयो जियत बसमें नहिं,
तौ देवै बहु त्रासा ॥
जो अब है सो तबहूँ मिलि है
ज्यों स्वपने जग भासा ॥
जहाँ आसा तहाँ वासा होवै,
मनका यही तमासा ॥
जीवत होय दया सतगुरुकी,
घटमें ज्ञान प्रकासा ।
कहैं कबीर मुक्त तुम होवो,
जीवतही धर्म्मदासा ॥ ५९ ॥

भजन ।

सन्तो ! सो निजदेश हमारा,
जहाँ जाय फिर हंस न आवे,
भवसागरकी धारा ॥ टे० ॥

सूर्य्य चन्द्र नहिं तहाँ प्रकाशत,
नहिं नभ मंडल तारा ।
उदय न अस्त दिवस नहिं रजनी
बिना ज्योति उजियारा ॥
पांच तत्त्व गुण तीन तहाँ नहिं
नहिं तहाँ सृष्टि पसारा ।
तहाँ न मायाकृत प्रपंच यह,
लोक कुटुम परिवारा ॥
क्षुधा तृषा नहिं शीत उष्ण तहाँ
सुख दुखको संचारा ।
आधि न व्याधि उपाधि कछु तहाँ
पाप पुण्य विस्तारा ॥
ऊँच नीच कुलकी मर्यादा,
आश्रम वर्ण विचारा ।
धर्म्म अधर्म्म तहाँ कछु नाहीं,

संयम नियम अचारा ।
अति अभिराम धाम सर्वोपर,
शोभा जासु अपारा ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो,
तीन लोकसे न्यारा ॥ ६० ॥

भजन ।

सन्तो ! सतगुरु अलख लखाया ।
परमप्रकाशकपुञ्ज-ज्ञानघन, घटभीतरदरशाया॥टे०
मन बुद्धि बानी जाहि न जानत, वेद कहतसकुचाया।
अगम अपार अथाह अगोचर, नेति नेतिजेहिगाया॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्माके, वह प्रभुहाथनआया।
व्यास वसिष्ठ विचारत हारे, कोई पार नहिं पाया॥
तिलमें तेल काष्ठमें अग्नी, घृत पय माहिं समाया।
शब्दमें अर्थ पदारथ पदमें, स्वरमें राग सुनाया॥
बीज माहिं अंकुर तरु शाखा, पत्र फूल फल छाया।

त्यों आतममें है परमातम, ब्रह्म जीब अरु माया ॥
कहें कबीर कृपालु कृपाकारि, निज स्वरूप परखाया।
जप तप योग यज्ञ व्रत पूजा, सब जञ्जालछुडाया ६१

भजन ।

सन्तो ! निरंजन जाल पसारा ।
स्वर्गपताल मर्त्यमण्डलरचि, तीनलोकविस्तारा॥टे०
हरि हर ब्रह्माको प्रगटायो, तिन्हैं दियो शिरभारा।
ठाम ठाम तीरथ रचि रोप्यो, ठगबेको संसारा ॥
चौरासी बिच जीव फँसावे, कबहुँ न होय उबारा।
जारि बारि भस्मी कारि डारे, फिरि देवै अवतारा ॥
आवागमन रखे उरझाई बोरे भवकी धारा ।
सतगुरु शब्द बिना नर चीन्हें कैसे ? उतरे पारा॥
माया फाँस फँसाय जीव सब, आप बनै करतारा।
सत्यपुरुषका अमरलोक है, ताको मूंद्यो द्वारा ॥
नेम धर्म आचार यज्ञ तप, ये उरले व्यवहारा ।

जासे मिलै अखण्ड मोक्षसुख, सो मारग है न्यारा॥
काल जालसे बाँचा चाहो, गहो शब्द ततसारा।
कहैं कबीर अमरकरिराखों, जोनिज होयहमारा ६२

भजन।

निरञ्जन धन तुम्हरो दरबार।
जहाँ तनक न न्याय बिचार॥ टे०॥
रङ्ग महलमें बसें मसखरे, पास तेरे सरदार।
धूर धूपमें साधु विराजें, भये जो भवनिधि पार॥
वेश्या ओढें खासा मलमल, गल मोतियनको हार।
पतिबरताको मिले न खाधी, सूखा निरस अहार॥
पाखण्डीका जगमें आदर, सन्तको कहें लबार।
अज्ञानीको परम विवेकी, ज्ञानीको मूढ़ गवाँर॥
कहें कबीर फकीर पुकारी, उलटा सब व्यवहार।
साँच कहै जग मारन धावै, झूठनको इतबार॥६३॥

स्त्रियोंकेलियेउपदेशमयश्रृङ्गार-ज्ञानगजरा।

बहिनो! पहिनोनी अनोखो,
चोखो ज्ञान गजरो ॥ टे० ॥
सङ्गति साधुकी उपवन जावो,
सद् उपदेश प्रसून लै आवो।
वृत्तिके तारमें ताहि पोहावो,
फुन्दा श्रद्धा सहित लगावो ॥
प्रभुको ध्यान गजरो ॥
बहिनो! पहिनोनी अनोखो चोखो० ॥
चित्त विक्षेपको मैल निवारी ॥
तपको कूंकू मस्तक धारी ॥
ओढ़ो सत्यव्रतकी सारी,
जामें संयम नियम किनारी ॥
शास्त्र प्रमाण गजरो ॥
बहिनो! पहिनोनी अनोखो चोखो० ॥

मनसंकल्पके केश गुथावो,
मेहँदी दानसे हाथ रचावो।
सुरमा नैन विवेक लगावो,
जासे सत मिथ्या लखि पावो॥
पुरुष प्रधान गजरो॥
बहिनो! पहिनोनी अनोखो० ॥
गहना विद्याके गढवावो,
तिनको पहिर शृङ्गार बनावो।
नौधा भक्तिसे पीव रिझावो,
तब तुम सुन्दरि नारि कहावो॥
परम सुजान गजरो॥
बहिनो! पहिनोनी अनोखो चोखो० ॥
भरमिनि ऐसो गजरो पायो,
ईश्वर भूषण दूर बहायो।
छाय यम शंकित शीश नमायो,

लखि मुनिजनको मन ललचायो ॥
प्रवर महान् गजरो ॥
बहिनो ! पहिनोनी अनोखो चोखो०॥६४॥

भजन ।

पियाके घरकी रीत, अनोखी बहू सीख लेरी ।
नहिंठौर ठिकाना और कहीं तेरा, कहीमान मेरी।टे०
करै न पियसे प्रेम क्यों ? यही अँदेशा मोहिं ।
पीयर कारण रोवते, लाज न आवै तोहि ।
गई कहाँ मारी मति तेरी॥अनोखी बहू सीख लेरी १
खान पान भावै नहीं, पीयर बिन अकुलाय ।
पियको दरशन नहिं करे, इकचित ध्यान लगाय॥
इसीसे नींद न आवैरी॥ अनोखी बहू सीख लेरी।
कपट किवँरिया खोलिकै, निज मंदिरमें आव ।
इत उत तकजा त्यागिकै, पियमें मन ठहराव ।
भलाई इसीमें सब हैरी॥ अनोखी बहू सीख लेरी॥

सुषमन सेज बिछायकै, पीतमको पौढाव ।
पियसे मिलकै एकहो, दुरमति दूरि बहाव ।
तभी तेरो जिय सुख पावेरी।अनोखी बहू सीख लेरी
तेरे पीहर होतहैं झूठा सब व्यवहार ।
तेहि तजि पियसे प्रीति करु, कहैं कबीर पुकार ॥
बात ये सुन लेना मेरी॥अनोखी बहू सीख लेरी ६ ५॥

चेतावनी-भजन ।

टुक जिन्दगी बन्दगी करले !
क्या माया मद मस्ताना बे ? ॥ टे० ॥
रथ गाडी सुखपाल पालकी, हाथी घोडे नाना बे।
सबको छोड काठकी घोडी, चढ जावै समसाना बे॥
ऊनी पाट पीताम्बर अम्बर, जरी बाफता बाना बे।
तू तो गजी चार गज ओढे, भरा रहे तोशाखानाबे॥
कर तदबीर अखीर खरचकी, मंजिलदूरकीजानाबे।
मारग माहिं मुकाम मिले नहिं, चौकी हाटदुकानाबे।

जीतेजी ले जीत जनमको, नहिं पीछे पछताना बे।
कहैं कबीर चहे जो कर यह, घोडा यह मैदानाबे६६

सन्तोंका माहात्म्य ।

भजन ।

नारद ! मेरो साधुसे अन्तर नाहीं ।
मेरे घटमें साधु बसत हैं, मैं साधुनके माहीं ॥टे०॥
साधु जिमायेसे मैं जीमू, होय अति तृप्त अघाऊँ।
साधु दुखायेसे दुख पाऊँ, व्याकुल होय घबराऊँ॥
जागे साधु तौ मैं जागूं, सोवें साधु तौ सोऊँ ।
जो कोई साधुसे द्रोह करे, तेहि जरामूरसे खोऊँ ॥
जहाँ साधु मेरो यश गावें, तहाँ मैं करूं निवासा।
साधु चलें आगू उठ धाऊँ, मोहिं साधुनकी आसा॥
माया मेरी है अर्धाङ्गी, सो साधुनकी दासी ।
अरसठ तीरथ साधु चरणमें, कोटि गया अरु काशी
साधुको ध्यान मेरे उर अन्तर, रहत निरन्तर भाई।
कहैं कबीर साधुकी महिमा, असहरि निज मुखगाई

सन्तकी रहनी-भजन ।

साधुका होना मुसकिल है ।
काम क्रोधकी चोट बचावै,सो निज साधूहै॥टे०॥
काया मध्ये धुनी धकावै, रमता राम रमै ।
करम काठ कोयला करिडारै, जगसे न्यारा है ॥
आशा तृष्णा कलह कलपना, ममता दूर करै ।
दम्भ मान मद लोभ मोहसे,आठो पहर लरै॥साधु०।
माया महा ठगिन है हरिकी, ज्ञान विराग हरै ।
तासे होय होसियार निरन्तर,गुरुपदध्यानधरै॥सा०
मोटी माया सबकोइ त्यागै, झीनी नाहिं तजै ।
कहैंकबीरसाधुसोईसाँचा,झीनीदेखिभगै॥सा०६८

अज्ञानीकी दशा-भजन ।

पानीमें मीन पियासी,
मोहिं सुनि सुनि आवत हाँसी ॥ टे० ॥
आतम ज्ञान बिना नर भटकै,

कोइ मथुरा कोइ काशी।
जैसे मृगा नाभि कस्तूरी,
बन २ फिरत उदासी॥
जल बिच कमल कमल बिच कलियाँ,
तापर भवंर निवासी।
सो मनवश त्रैलोक भयो सब,
यती सती संन्यासी॥
जाको ध्यान धरें विधि हरि हर,
मुनिजन सहस अठासी।
सो तेरे घट माहिं बिराजे,
परम पुरुष अविनाशी॥
है हाजिर तेहि दूर बतावै,
दूरकी बात निराशी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
गुरु बिन भरम न जासी॥ ६९॥

चेतावनी-भजन ।

चादर झीनी हो राम झीनी ।
ये तो सदा नामरंग भीनी ॥ टे० ॥
अष्ट कमलदल चरखा चाले, पांच तत्त्व गुण तीनी।
कर्मकी पूनी कातन बैठी, कुकुरी सुरति महीनी॥
खासको तार संभारके कात्यो, नौमन प्रकृतिप्रवीनी।
सो लै सूत जुगतिसे जगकी, रचना रची नवीनी ॥
इंगला पिंगला ताना कीनो, सुषुमन भरनी दीनी ।
नव दस मास बीनते लागे, ठोंक ठांककर बीनी ॥
लै चादर सुर नर मुनि ओढी, ओढिके मैली कीनी।
ताहिकबीरजुगतिसेओढी, ज्योंकीत्योंधरदीनी७०

भजन ।

चादर होगई बहुत पुरानी,
अबतो सोच समुझ अभिमानी ॥ टे० ॥
अजब जुलाहे चादर बीनी, सूत करमको तानी ।

सुरति निरतिको भरना दीना, तब सबके मनमानी ।
मैले दाग परे पापनके, विषयनमें लपटानी ॥
ज्ञानको साबुन लाय न धोयो, सतसंगतिके पानी ।
भई खराब आब गई सारी, लोभ मोहमें सानी ।
ऐसेहि ओढत उमर गमाई, भली बुरी नहिं जानी ॥
शंका मानि जानु जिय अपने, है यह वस्तु बिरानी ।
कहें कबीर येहि राखुयतनसे, नहिं फिर हाथ न आनी

वाचकज्ञानीको उपदेश–भजन ।

विज्ञानी ! सुन सतगुरुकी बानी लो ।
जेहि प्रताप हम भये विरागी,
त्यागि सकल कुलकानी लो ॥ टे० ॥
पहिले बहुत दिनोंतक भटके,
सुनि २ बात बिरानी लो ।
अब कुछ उरमें पाप भये थिर,
आदि कथा संहदानी लो ॥

आय पड्यो कानन्में मेरे,
अधर शब्द असमानी लो।
जड चेतनकी ग्रन्थी छूटी,
भयो भिन्न पय पानी लो॥
कुमता गई प्रगट भई समता,
रमतासे रुचि मानी लो।
लालच लोभ मोह ममताकी,
मिटगई ऐंचा–तानी लो॥
चंचल मन निश्चल हो बैठा,
सुरति निरति ठहरानी लो।
कहैं कबीर दया सतगुरुकी,
मिली अटल रजधानी लो॥ ७२॥

भजन।

चुवत अमियरस भरत ताल जहाँ,
शब्द उठे असमानी लो।
गुरुकी कृपा होय तब पावै,
परमधाम निरबानी लो॥ टे०॥

सरिता उमडि सिन्धुको सोषै,
नहिं गति जात बखानी लो ।
सूर्य्य चन्द्र तारागण जहाँ नहिं,
रैन न दिवस निशानी लो ॥
बाजे बजैं सितार बाँसुरी,
ररङ्कार मृदुबानी लो ।
बिन नभ बिजली चमके बरषै,
बिन बादर जहाँ पानी लो ॥
शिव अज विष्णु सुरेश शेष सब,
निज २ मति अनुमानी लो ।
स्तुति करत निरन्तर ठाढे,
शारद परम सयानी लो ॥
कहैं कबीर भेदकी बानी,
बिरला कोई जानी लो ।
कारि पहिचान फेरि नहिं आवै,
चौरासीकी खानी लो ॥ ७३ ॥

अध्यात्मज्ञानकी प्राप्ति-भजन।

मेरी नजरमें मोती आयाहै।

करिकेकृपादयानिधिसतगुरु, घटकेबीचलखायाहै।टे

कोइकहेहलकाकोइकहेभारी, सबजगभर्ममुलाया है

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हारे, कोई पार नहिं पाया है॥

शारदशेषसुरेशगणेशहु, विविधजासुगुणगायाहै।

नेतिनेतिकहिमहिमावरणत, वेदहु मन सकुचायाहै॥

द्विदलचतुरषटअष्टदुवादश, सहसकमलबिचकायाहै

ताके ऊपर आप बिराजे, अद्भुत रूप धरायाहै॥

हैतिलकेझिलमिलतिलभीतर, तातिलबीचछिपायाहै

तिनका आड पहाडसी भासे, परमपुरुषकी छायाहै॥

अनहदकीधुनभँवरगुफामें, अतिघन घोर मचायाहै।

बाजे बजैंअनेकभाँतिके, सुनिकै मन ललचायाहै॥

पुरुषअनामीसबकास्वामी, रचिनिजपिण्डसमाया है।

ताकी नकल देखि मायाने, यह ब्रह्माण्ड बनायाहै॥

यहसबकालजालकोफन्दा, मनकल्पित ठहरायाहै ।
कहैंकबीरसत्यपदसतगुरु, न्याराकारिदरशायाहै ७४

वैराग्यका-भजन ।

सुलताना बलक बुखारेदा ॥
शाहीतजकरलियाफकीरी, अल्लानामपियारेदा ॥टे०
तब थे खाते लुकमा उमदा, मिसरी कन्द छुहारेदा ।
अबतो रूखा सूखाटूका, खाते साँझ सकारेदा ॥
जा तन पहने खासा मलमल, तीन टङ्क नौ तारेदा ॥
अबतो बोझ उठावनलागे, गुदड दशमन भारेदा ॥
चुनिचुनिकलियाँसेज बिछाते, फूलोंन्यारेन्यारेदा ।
अबधरतीपर सोवन लागे, कङ्करनहीं बुहारेदा ॥
जिनके संगकटकदलबादल, झंडाजरीकिनारेदा ।
कहैंकबीरसुनोभाईसाधो, फक्कडहुआअखारेदा ७५

प्रार्थना-कव्वाली ।

अय! दीनबन्धु स्वामी, सतगुरु कबीर मेरे ।

बकशौ दयासे अपनी, अवगुन कशीर मेरे॥टे०॥
जैसा हूं मैं कुकरमी, व्यभिचारी औ अधर्मी।
दुनियाँमें कम् मिलैंगे, पापी नजीर मेरे॥
गिन गिन सुनाऊँ कितने? जो जो हैं ऐब मुझमें।
रोशनहैं कुल तुम्हें वो, रोशन जमीर मेरे॥
तुम बिन है कौन ऐसा, जो कालसे बचावे।
भवसिन्धुमें फँसेको, अतिधीर बीर मेरे॥
सतनाम दान देकर, कीजे उद्धार मेरे।
मुरशिद मेहरबाँ साहिब, पीरोंके पीर मेरे॥
चरणोंमें आ पड़ाहै, खालिककी बीनतीहै।
कीजे सहाय आकर, वक्ते अखीर मेरे॥ ७६ ॥

वैराग्यकी-गजल।

हमन् हैं इश्क मस्ताने, हमन्को होशियारी क्या?।
रहें आजाद हम जगमें, हमे दुनियाँसेयारी क्या?।टे०
जो बिछुरेहैं पियारेसे, भटकते दरबदर फिरते।

हमारा यारहै हम्में, हमन्को इन्तजारी क्या?
खलक सब नाम अपनेको, बहुत कुछशिरपटकतीहै।
हमन् गुरुज्ञान आलिम्हैं, हमन्को नामदारी क्या?॥
न पल बिछुरें पिया हमसे, न हम बिछुरें पियारेसे।
जो ऐसी लव लगी हरदम्, तो हमकोबेकरारीक्या?॥
कबीरा इश्कका माता, दुईको दूर की दिलसे।
ये चलनाराहनाज़ुकहै, हमन्शिरबोझभारीक्या? ७७

गजल।

तुझेहै शौक मिलनेका, तौ हरदम् लौ लगाता जा।
जलाकरखुशानुमाईको, भसमतनपर रमाताजा॥ टे०
पकडकर इश्ककी झाड़ू, सफाकर हुज्रऐदिलको।
दुईकी धूलको लैकर, मुसल्लेपर उडाताजा॥
तोडकर फेंकदे तसबी, किताबें डाल पानीमें।
मुताले जो किया कुछहै, वो दिलसे सब भुलाताजा॥
न मर भूखा नरखरोजा, नजामसजिदमेंकरसिजदा।

मजूका तोडकर कूजा, शराबे शौक पीताजा ॥
न हो मुल्लाँ न बन ब्राह्मण, दुईका तर्ककर झगडा।
हुकमनामाकलन्दरका, "अनलहक्" तूसुनाताजा॥

बसन्त ।

मोरे सतगुरु खेलैं नित बसन्त ।
मिलि सन्त विशारद मतिमहन्त ॥ टे० ॥
अनुराग भक्तिको घोरि रङ्ग ।
छिरकैं एकपर एक कारि उमङ्ग ॥
उर झोरीमें समता गुलाल ।
भरि बचन मूठि मारैं कृपाल ॥
नहिं सुरदुरलभ तन बारबार ।
ताते भजिले सतनाम सार ॥
नातो भवसागरकी धार जाय ।
तन कीट कृमि योनिनमें पाय ॥
दुख भूख प्यास तप शीत द्वन्द्व ।

हमारा यारहै हमसें, हमन्को इन्तजारी क्या ?
खलक सब नाम अपनेको, बहुत कुछशिरपटकतीहै।
हमन् गुरुज्ञान आलिम्हैं, हमन्को नामदारी क्या?॥
न पल बिछुरें पिया हमसे, न हम बिछुरें पियारेसे ।
जो ऐसी लव लगी हरदम्, तो हमकोबेकरारीक्या?॥
कबीरा इश्कका माता, दुईको दूर की दिलसे ।
ये चलनाराहनाजुकहै, हमन्शिरबोझभारीक्या? ७७

गजल ।

तुझेहै शौक मिलनेका, तौ हरदम् लौ लगाता जा ।
जलाकरखुशनुमाईको, भसमतनपर रमाताजा॥टे०
पकडकर इश्ककी झाडू, सफाकर हुजरेदिलको ।
दुईकी धूलको लैकर, मुसल्लेपर उडाताजा ।
तोडकर फेंकदे तसवी, किताबें डाल पानीमें
मुताले जो किया कुछहै, वो दिलसे सब भुलाताजा।
न मर भूखा नरखरोजा, नजामसजिदमेंकरसिजदा

वजूका तोडकर कूजा, शराबे शौक पीताजा ॥
न हो मुल्लाँ न बन ब्राह्मण,दुईका तर्ककर झगडा।
हुकमनामाकलन्दरका, "अनलहक्"तूसुनाताजा॥

बसन्त ।

मोरे सतगुरु खेलैं नित बसन्त ।
मिलि सन्त विशारद मतिमहन्त ॥ टे० ॥
अनुराग भक्तिको घोरि रङ्ग ।
छिरकें एकपर एक कारि उमङ्ग ॥
उर झोरीमें समता गुलाल ।
भरि बचन मूठि मारैं कृपाल ॥
नहिं सुरदुरलभ तन बारबार ।
ताते भजिले सतनाम सार ॥
नातो भवसागरकी धार जाय ।
तन कीट कृमि योनिनमें पाय ॥
दुख भूख प्यास तप शीत द्वन्द्व ।

अतिकठिन क्लेशके परहिं फन्द ॥
औघटमें करिहो कह उपाव ॥
जहाँ नाहिं खेवैया और नाव ॥
मनहीं मन संकट घूटि घूटि ।
सहि रहि जैहो शिर कूटि कूटि ॥
तेहि कारण चेतहु अबहिं बीर ।
समुझाय कहैं तुमको कबीर ॥ ७९ ॥

भजन ।

बन्दों सतगुरु साहिब कृपाल ।
जासे छूटे भवद्वन्द्व जाल ॥ टे० ॥
धरि ध्यान हृदय ध्यावें महेश ।
पदपंकज सेवैं अज सुरेश ॥
नारद शारद अरु श्रुति अशेष ।
मुख सहस करत गुणगान शेष ॥
अभिमान नाग मृगपति प्रचण्ड ।
त्रयताप अनल पावस अखण्ड ॥

सुरतरु विशाल फलप्रद यथेष्ट ।
भवरोग हरण वर भिषग् श्रेष्ठ ॥
अनुरोध रहित गति मति उदार ।
कश्मल अरण्य तीक्षण कुठार ॥
अद्वैत अखिल पति सप्रमेय ।
रागादि व्यालगण बैनतेय ॥
निरबन्ध विगतमल अतिस्वछन्द ।
अनवद्य अनघ आनन्दकन्द ॥
धर्म्मदास और तजि सकल आस ।
राखत कबीरको दृढ विश्वास ॥ ८० ॥

भजन ।

तोहिं राम मिलेगो, घूँघटके पट खोलरी ! ।
घट घटमें वह रमें निरन्तर,
कटुक बचन मत बोलरी ॥ टे० ॥
भक्ति करनको गर्भवाससे, कारि आई तू कौलरी ।
बाहर आय भूलगई सजनी, पियो विषय रस घोलरी

धन यौवनको गर्व न कीजे,काचे रँगको चोलरी।
चार दिनामें होयगो फीको, उड जावेगा झोलरी॥
श्रद्धासे सतगुरु शरणागत, हो तजि डामाडोलरी।
गुरुकी कृपा मिले चिन्तामणि,घट भीतरअनमोलरी
किरीया कर्मके भर्ममेंपडकर,अब जनि छाती छोलरी
कहैं कबीर अनन्द भयो मन,
बाज्यो अनहद घोलरी ॥ तोहिं० ॥ ८१ ॥

होली ।

अरी ! होनी होली सो होली,
चेतु अजहूँ मति भोली ॥ टे० ॥
जुगन जुगनसे पांव पसारे,
खूब पेटभर सोली ।
आगम निगम जगावत हारे,
कटुक मधुर बहु बोली ।
आँख तबहूँ नहिं खोली ॥

होनी होली सो होली ॥
यह मानुष तन पाय,
आयु क्यों खोवत इतउत डोली ।
अन्तसमय यमदूत आयकै,
करिहैं पकरि ठठोली ॥
देखि जिय जैहैं कलोली,
होनी होली सो होली ॥
विनय अबीर स्वधर्म अरगजा,
भरि गुलालकी झोली ।
खेलन फाग चलो निज प्रभुसे,
समता केशर घोली ॥
शीश उनहींके ढोली ।
होनी होली सो होली ॥
जग प्रचंड नश्वर मायाकृत,
कल्पित कलित कपोली ।

मान सरोवरमें नाना विधि,
उठत तरङ्ग झकोली ॥
देखु उरमाहिं टटोली,
होनी होली सो होली ॥
कहैं कबीर सुहागिन सुनले,
करु निज वृत्ति अहोली ।
सुरति शब्दकी धार पकरि चढु,
गगन गुफा जहाँ पोली ॥
वस्तु मिली है अनमोली ।
होनी होली सो होली ॥ ८२ ॥

होली ।

आज निज घटबिच फाग मचैहों ।
तजि मोह मान करुणानिधानके,
ध्यान चरणमें लगैहों ॥ टे० ॥
एकस्वर साधि तँबूरा तनको,

स्वासके तार मिलैहों ।
मोद मृदङ्ग मजीरा मनसा,
विनयको बीन बजैहों ॥
भजन सतनामको गैहों ॥
आज निज घटबिच फाग म० ॥
भक्ति उमङ्ग रङ्ग केशरको,
लै प्रभुपै ढरकै हों ।
प्रेम सनेह गुलाल अरगजा,
उनहींके शीश चढैहों ।
सुरतिकी मुरति बनैहों ॥
आज निज घटबिच फाग म० ॥
सार विचार श्रृंगार साजि मति,
सन्मुख आनि नचैहों ।
विविध प्रकार रिझाय नाथको,
फगुवा लैकारि रैहों ।

अखंड सुखपाय अघैहों ॥
आज निज घटबिच फाग म० ॥
कीच उलीच नीच कर्म्मनको,
निगुरनपर बरषैहों ।
घातिक जारि राखकारि कारिख,
विमुखके मुखमें लगैहों ॥
तबै धर्म्मदास कहैहों, ॥
आज निज घटबिच फाग मचैहों ॥ ८३ ॥

लावणी रंगत लँगड़ी ।

करुणा भवन कबीर, शमन भवपीरवीरविग्रह धारी ।
अति उपकारी, कमलदलप्रगटेनिज इच्छाचारी ! टे०
कुन्द इन्दु अनुरूप देखि वपु,
अतिअनूप मनमथ लाजै ॥
करत पराजय कौमुदी,
दिव्य वसन भूषण साजै ॥

दीप्ति अमित मणिजडित,
तडित आभाजित शीश मुकुट राजै।
तिलक मनोहर, भाल शुचि,
सुमनमाल उरमें भ्राजै॥
निर्विकार अकार निर्मल, नित्यमुक्त निरामयम्।
निजानन्दानन्दकन्द, स्वच्छन्द मद्भूत मद्वयम्॥
निरनिमित्त परार्थ कारी, निरममत्व मुदालयम्।
निर्विवाद विषाद निरगत, निष्प्रपञ्च सनिर्भयम्॥
भ्रान्ति ध्वान्त ध्वंसक प्रधान,
निर्भ्रान्ति विमल विद्याधारी।
अतिउपकारी,
कमलदल प्रगटे निज इच्छाचारी॥ १॥
मुदमंगलमय वेष सुखद, सर्वेश सर्वविद् विज्ञानी।
निरअभिमानी, विगत मल द्वेष क्लेश हत निर्वानी॥
ध्यावत सन्त महन्त अन्त नहिं, पावतहैं ज्ञानीध्यानी।

परम सयानी, भारती चकित होत वरणत बानी॥
यस्य विविध चारित्र चारुविचित्र सुरसरि निर्मलम्।
वक निमज्जि मराल, काक पिक भवन्ति निरर्गलम्॥
सिद्ध मुनि योगीन्द्र यति सुरवृन्द वन्द्य यदुत्पलम्।
शेष वदत अशेष मुख, गुण शक्यते न कथेत्यलम्॥
योग दण्डधारीअखण्ड, पाखंडप्रचण्ड खण्डनकारी।
अतिउपकारी, कमलदलप्रगटेनिज इच्छाचारी॥२॥

सेवकसुखद कृपालु,
काल कलिव्याल खगेश्वर अतिअभिराम।
धाम सुधामय,
साम गावत निशिवासर जेहि गुणग्राम॥
नामजाप जपि विमल होत जन,
मननशील मुनिवत् निष्काम।
बामदेव सम,
प्रसन्नसेवत भवन्ति प्रभु पूरणकाम॥

धर्मधुरीण प्रवीणगति मति अतिअपार विशारदम् ।
अज्ञानहरण प्रधाननिगदित ज्ञान भवनिधिपारदम्॥
वेदबोधित कर्मवर्म विचारसार असारदम् ।
आपत्तिहर सम्पत्तिसुख प्रतिपत्ति प्रचुरप्रकारदम् ॥
वरदायक वरदेशविनायकविश्वविदितवरब्रह्मचारी ।
अतिउपकारी, कमलदलप्रगटेनिज इच्छाचारी॥ २॥

अतिअनल्प तरुकल्प,
सत्यसंकल्प अखिल अन्तरयामी ।
अपर त्रिविष्टप परात्पर,
प्रवर परमतर सुखधामी ॥
अविनाशी अव्यक्त अजर अज,
अमर चराचरके स्वामी ।
अधम उधारन,
तरणतारण कारण निज अनुगामी ॥

यं विधिर्वरुणेन्द्रइन्द्रसुराः स्तुवन्ति निरन्तरम् ।
चिद्घनं दिव्यं ह्यमूर्तिं, पूरुषेति परात्परम् ॥
निराकार निरीह निर्गुण, किञ्चिदस्ति न तत्परम् ।
कञ्जपर्णसमुद्भवं, पारद भवाब्धि अतिदुस्तरम् ॥
धर्मदास दासानुदास भवदीयदास आज्ञाकारी ।
अतिउपकारी कमलदल प्रगटे निज इच्छाचारी ४॥

धर्मदास साहबने षट् दर्शनोंकी समालोचना करके कबीर साहेबका सिद्धान्त दर्शाया है ।

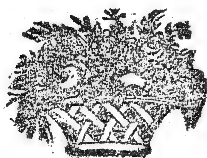
लावनी-रंगत लँगडी ।

जगतके मत सब हैंगे गीत अपना अपना गानेवाले।
कबीर केवल सत्य मिथ्याको परखानेवाले॥टे० ॥
मीमाँसककहेंकर्महिंसेसब जगमेंदुख सुख फल पावै।
बिना किये नहिं, होय कुछ बैठे बैठे पछतावै ॥
अग्निष्टोम अविधानयज्ञ विधिवत जो कोई करवावै।
ताके फलसे, स्वर्गसुख भोगनको वह नर जावै ॥

बन्ध मोक्ष सब कर्महिंसे जैमिनीय समझानेवाले॥
कबीर केवल सत्य मिथ्याको परखाने वाले ॥१॥
वैशेषिककहैंक्रियासकलनिष्फललौकिक वैदिकसारी
समय विना जो; करै कोइ वृथा हृदयमें हठधारी॥
ग्रीषमऋतुमेंबीजबोय जिमि खोय देय नरअविचारी।
होय न एक कण, किये बहु यत्न शीश दैदै मारी॥
कर्मसे प्रबल कणादि महर्षी समयको बतलानेवाले।
कबीर केवल सत्य मिथ्याको परखाने वाले ॥२॥
नैय्यायिक निःशेष पदारथ कर्तृजन्य अनुमानकरै।
कार्य्यरूपसे, काल अरु कर्मका क्रम निर्माण करै॥
शीतकालमें धूप, धूपमें वर्षाका सामान करै।
बलीको निर्बल, चहे वह निर्बलको बलवान करै॥
गौतम सब जगका कर्त्ता, ईश्वरको ठहरानेवाले।
कबीर केवल सत्यमिथ्याकोपरखानेवाले॥ ३॥यो-
गीयमनियमादिसम्बन्नासाभित्यागिममतामदक्रोध।

ध्यानधारणासहित समाधीवृत्तिकाकरैनिरोध॥शून्य
शिखरपरविमलसहसदलकमलमध्यलखिज्योतिप्रबो
ध॥अणिमादिकलहिहोयसर्वज्ञनाशकारिप्रबलअबोध
पातञ्जलि यहि भाँति लोभ सिद्धिका दिखलानेवाले।
कबीर केवल, सत्य मिथ्याको परखानेवाले ॥४॥
जप तप व्रत संयमकरकेनरचाहेजितना दुःख सहे।
प्रकृति पुरुषके, विवेक विन मोक्ष नहीं यहसांख्यकहे
चाहै वनमें जाय चहै ज्ञानी बनके घरहीमें रहे ।
वैरागी होय ईषणा त्यागि चहै त्रयदण्ड गहै ॥
कपिलमुनी यहिभाँति ज्ञान अपनादृढ़ करवानेवाले।
कबीर केवल सत्य मिथ्याको परखानेवाले ॥ ५॥
जो कुछ है यह दृश्य चराचर नामरूप न्यारा न्यारा।
सर्व ब्रह्म खलु, न किञ्चित् भिन्न कालत्रय निरधारा॥
जैसे रज्जुमें सर्प, बहे मृगतृष्णामें जलकी धारा।
तैसे कल्पित, अविद्याजन्य जगत यह है सारा॥

असकथिगे आचार्यव्यासवेदान्तके कहलानेवाले।
कबीर केवल, सत्य मिथ्याको परखानेवाले ॥६॥
कहें अनित्यहि नित्यअनातमको आतम निश्चय जानै।
काँच वज्रमणि, खाँड खारीको एकहि करि मानै॥
यही ज्ञान विपरीत धारिकै, वृथा वाद अपना ठानै।
मुक्ति न पावैं, बिना गुरुपदके कोई पहचानै ॥
धर्मदास आचार्य्य सकल मायामें उरझानेवाले।
कबीर केवलसत्य मिथ्याको परखानेवाले॥७॥८९॥



सत्यनाम ।

अमरदासजीकृत ख्याल ।

ख्याल–रङ्गत लँगड़ी ।

सतगुरु कबीर अति धीर वीर,
अम्मर शरीर निरअभिमानी ।
रोशन जमीर पीरोंके पीर,
फक्कर फकीर इकलाशानी ॥ टे० ॥
प्रगटे प्रभात पुरइनके पात,
बिन तात मात कारि प्रभुताई ।
काशी मँझार अवतार धार,
लीला अपार व्हाँ दिखलाई ॥
गुरु रामानन्द आनन्दकन्द,
उनसे स्वच्छन्द दीक्षा पाई ।

मनके विकार तजि करु विकार,
कहै बार बार सबसे जाई ॥
पण्डित प्रवीन होगये अधीन,
नहिं पडी चीन्ह उनकी बानी ।
रोशन जमीर पीरोंके पीर,
फक्कर फकीर इकलाशानी ॥ १ ॥
मथुरामें जाय बीना बजाय,
लीन्हों लुभाय सब नारी नर ।
जगदीश जाय सागर हटाय,
दीन्हों रुपाय हरिका मन्दर ॥
धारि सन्तवेश गये मगधदेश,
कीन्हों प्रवेश गुरुगम घरघर ।
दोऊ दीन शोध करके प्रबोध,
मेटयो बिरोध दुख द्वन्द्व खतर ॥
गोरख वासिष्ठसे करी गुष्ठ,

ऐसे वरिष्ठ पूरण ज्ञानी।
रोशन जमीर पीरोंके पीर,
फक्कर फकीर इकलाशानी ॥ २ ॥
हैं साधु सन्त जगमें अनन्त,
तिनके महन्त बनि अधिकारी।
मद मोह काम दियो द्रोह धाम,
मनकी तमाम सैना मारी ॥
निज शब्दसार करके उचार,
मेटयो विकार सब संसारी।
है परम धामसे परे ठाम,
अविगति मुकामकी गति न्यारी ॥
भवसिन्धु धारसे किये पार,
करके उबार कईएक प्रानी।
रोशन जमीर पीरोंके पीर,
फक्कर फकीर इकलाशानी ॥ ३ ॥

अद्भुत स्वरूप हंसनके भूप,
शोभा अनूप हैं अविनाशी।
भवहरण पीर गुणगण गंभीर,
तोड्यो जंजीर जमकी फांशी॥
सब कालजालको दियो टाल,
ततकाल मार गुरुगम गाँसी।
कारि जासु भक्ति होजाय मुक्ति,
नर पाय युक्ति यह सुखरासी॥
कहे अमरदास दासानुदास,
चरणोंकी आस मनमें ठानी।
रोशन जमीर पीरोंके पीर,
फक्कर फकीर इकलाशानी॥ ४॥

ख्याल २।

सुमिरों प्रथम उसी सतगुरुको,
जिसने हमें यह ज्ञान दिया।

भर्मजालसे छुडाकर,
निर्भय पद निर्वान दिया ॥ टे० ॥
उसीने हमको पिण्ड दिया,
अरु उसीने हमको प्रान दिया ।
पशूरूपसे उसीने,
बना हमें इन्शान दिया ॥
पाप पुण्य जो कुछ था हमारा,
जुदा जुदा कर छान दिया ।
शिरपर पंजा हमारे धरके,
बहुत बरदान दिया ॥
दिव्य दृष्टि होगई हमने,
दुनियाँका तजि तोफान दिया ।
भर्मजालसे छुडाकर,
निर्भयपद निर्वान दिया ॥ १ ॥
भाव भक्ति दी उसीने हमको,
उसीने सुमिरन ध्यान दिया ।

उसीने हमको योग अरू,
युक्तिका मूलमँडान दिया ॥
उसीने राग छुडाय हमें,
वैराग मता गलतान दिया ।
लगी न देरी उसीने,
मिला हमें भगवान दिया ॥
जीवन मुक्ती हुई हमारी,
मिटा सकल अज्ञान दिया ।
भर्मजालसे छुडाकर,
निर्भयपद निर्वान दिया ॥ २ ॥
हमभी उसीके चरणोंमें कर,
तन मन धन कुरबान दिया ।
उसने हमको दयाकर,
सत्यनाम इक दान दिया ॥
कहे जो अमृत बचन उन्हें,
सुननेको हमने कान दिया ।

फिर न बिसारा जो कुछ,
उसने हमको फरमान दिया ॥
करके गुलामी उसकी हमने,
गला अपना अभिमान दिया।
भर्मजालसे छुडाकर,
निर्भय पद निर्वान दिया ॥ २ ॥
बन्दीमोचन करी हमारी,
अजब मुक्तिका पान दिया।
भवसागरसे पारकर,
अमरलोक अस्थान दिया ॥
कण्ठी तिलक ताज अरु कलँगी,
हाथमें नाम निशान दिया।
दास अमरको उसीने,
गदासे कर सुलतान दिया ॥
मुरार अरु कल्यान भक्तका,

उसने कारि कल्यान दिया ।
भर्मजालसे छुडाकर,
निर्भय पद निर्वान दिया ॥ ४ ॥

ख्याल ३.

मन्दिर तोड मस्जिदको तोडे,
तो कुछ नहीं मुजाका है ।
दिलमत किसीका तोड यह तो,
घर खास खुदाका है ॥ टे० ॥
मन्दिरमें तो बुत धरे हैं,
अरु मस्जिदमें सफस् सफाई है ।
दिल दरगामें झलकता,
बिलकुल नूर खुदाई है ॥
क्या है व्हां इन्शांके अन्दर,
एक रोशनी छाई है ।

कमती बढ़ती नजरमें नहिं
आती एक राई है ॥

शेर—हरेकके जान और दिलमें, वही दिलजान रहताहै
हरेक इन्शानके अन्दर, वही लासान रहताहै ॥
रहमहै जिसके दिल अन्दर, वहीं रहमान रहताहै ॥
जुलुमहै जिसके दिलऊपर, वहीं शैतान रहताहै ॥

मिलान—छोड़ जुल्मतकी न्यामतको,
बेहतर सबसे फाँका है ।
दिल मत किसीका तोड,
यह तो घर खास खुदाका है ॥ १ ॥
जैसा दर्द बुरा अपनेको,
वैसा दर्द बुरा सबको ।
जान पराई सतामत,
बहुत बुरा लगता रबको ॥

खुदा तराजूवीच तौलता,
वाजिब और ना वाजिबको।
जाहिर बातिन जानताहै,
वह सबके कालिबको॥

शेर—जबाँ अपनीकी लज्जतको, पराई जानलै मारी।
खुदाका खौफ़ ना खाया, उखाडी भिस्तकीक्यारी
अदल इन्साफ करनेको, अदालतबीच वो बारी।
कभीनहिं माफ करनेका, सितंगर ये सितम्गारी॥
मि०—माफ करावेगाव्हांक्या, कोइ तेराबाबाकाकाहै
दिलमतकिसीकातोड़, यहतोघरखासखुदाकाहै २
है पीरोंका पीर वही, जो जाने पीर पराई है।
रहम न जिसके है दिलमें, खूनी वही कसाईहै॥
बेदर्दीको दर्द नहीं, जो मारै जान खुदाईहै।
बालबालमें जिनोंके, आग दोजखी छाई है॥

शेर—एकदोजखकोजाताहै, एक जिन्नतकाहै रस्ता॥
सवाबी माल है महंगा, अजाबी माल है सस्ता ॥
वही जिन्नतमें जावेगा, जो अपने नफ्सको कस्ता।
हवा अरु हिर्समें भूला, वही दोजखमें जा फस्ता॥
मिलान—नेकी करले अय ! वन्दे,
बस यही भिस्तका नाका है ।
दिल मत किसीका तोड़,
यह तो घर खास खुदाका है ॥ ३ ॥
जान सताना नहीं किसीकी,
यही कुराँकी आयत है ।
इससे ज्यादा न कोई,
सखावत है न इबादत है ॥
यही तो बड़ी शुजाअत है,
और यही तो बड़ी सआदत है ।

जाय खुदा है यही और,
सारी राह हिदायत है॥
शेर—अमरआशकयेकहताहै, बनाकेख्यालरहमानी।
यही तौहीद है बरहक्, रमूज इरकान हक्कानी॥
दया अरु धर्म पहचानो, छोडके चाल शैतानी।
वस्ल इस्लाम होजावो, मिटादो दिलकी कुफरानी॥
मिलान—इश्कका रस्ता सहज नहीं है,
बहुतसा टेढा बाँका है।
दिल मत किसीका तोड,
यह तो घर खास खुदाका है॥ ४॥

ख्याल ४.

ज्ञानखडग लै अडा खेतमें, सन्त सिपाही बांकाहै।
भर्मकिलेको तोड लै लिया, मुक्तिका नाका है॥टे०॥
सत्यनामका टोप लगा मन, तुरङ्गपर असवार हुवा।
विवेक बखतर पहन कस, कमर आप तैयार हुवा॥

सुमति कटार भावका भाला,प्रेमपटेसे बार हुवा।
देखके उसका जंग यम-राज तलक लाचार हुवा॥
गुरुगमकी बन्दूक उठाकर,छोडा एक भडाका है।
भर्म किलेको तोड लै लिया,मुक्तिका नाका है॥ १॥
सुरतिकमान निरतिका रोदा,शब्दतीर फटकाराहै।
लगी न देरी झपटके, काम क्रोधको मारा है।
लोभ मोहकी काटके गरदन, अहंकारको जाराहै॥
मनराजाका लशकर, भगा खेतसे हारा है॥
नहीं किसीसे डरे डराये, नौकर खास खुदाकाहै।
भर्मकिल्लेको तोड लैलिया, मुक्तिका नाका है॥ २॥
नामका झण्डा गाड दिया,और गैबीनौबतझडवाई।
पांच पचीसो जीतकर, दया दुहाई फिरवाई॥
मिथ्याका परपञ्च मेटकर, सत्यकी गादी बैठाई।
मार निकाले राजसे, कपट छिद्र छल कुटिलाई॥
हुआ नाम सरनाम सदाको,तीन लोकमें साकाहै।

भर्मकिलेको तोड लैलिया, मुक्तिका नाका है॥३॥
खेत छोडकर भगे न पीछा, वही सिपाही शूराहै।
उस आशकके हरदम, साहब हाल हजूरा है ॥
सद्गुरुने बखशीश किया,उसको निर्भयपदपूरा है।
चांद सुरजसे भी उसका, ज्यादा किया जहूराहै॥
दास अमर योंकहेहुआ,सरदारवो सभी जहाँकाहै।
भर्मकिलेको तोड लैलिया, मुक्तिका नाका है॥४॥

ख्याल ९.

कभी रहैं जमुनापै कभी, गङ्गाके किनारे फिरतेहैं।
जोगी बनके, मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरतेहैं॥टे०
कभी रहें मथुरामें कभी वृन्दावनमें विश्राम करैं।
नन्दगाँवमें, कभी गोबरधनमें आराम करैं॥
कभी कुञ्जगलियोंमें फिरके, गोकुलमें मुक्काम करैं।
सिवा उसीकी, यादके और न कोई काम करैं॥

शेर—कभी काशीमें रहें जाते कभी केदारको
प्रयागको जाकर कभी जाते हैं हम गिरनारको॥
कभी आबू देखकर जातेहैं फिर हरद्वारको ।
हर ठिकाने ढूण्ढते फिरते उसी दिलदारको ॥

मिलान—तलबगारदीदारकेदरदर, मारेमारेफिरतेहैं।
जोगीबनके, मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरतेहैं॥ १ ॥
मक्के अन्दर गये मगरबी, मिलेबहुतसे हमेंफकीर।
पूँछा उनसे, कहीं देखाहै तुमने वो बेनजीर ॥
कसमेंखाकरलगेवोकहने, इसीसबबसेहुए हकीर।
उमर गुजर गई, यादमें हाथ न आईवहतसबीर॥

शेर—आसमानी लोग भीकईइकमिलेव्हां आनकर।
उनसेभी पूछा कहीं को खूबरू आया नजर ॥
वे सभी कहने लगे कुल आसमानोंका जिकर ।
नाम तो हमने सुना पर है निशाकी नहीं खबर॥

मिलान-इसी फिकरमेंमहरऔरमाहसितारेफिरतेहैं ॥
जोगीबनके, मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरतेहैं ॥२॥
मिले दक्षिणीलोग बहुतसे, और मिले उतराखण्डी
कोई झोलियें, लिये कांधे अरु कोई बांधे झण्डी ॥
कोई बैरागीकोईउदासी, कोईबनवासीबनखण्डी।
कोई अचारी, ब्रह्मचारी कोई संन्यासी दण्डी ॥
शेर-पूछता सबसे फिरा, दिलदारको देखा कहीं ।
वो तो सब कहने लगे सपने तलक मुतलक नहीं॥
ता जिस जाँपर लगा, ज्यों त्योंसे कर पहुँचे वहीं।
र न देखाहै वो दिलवर, जिस जगे ढूंढा तहीं ॥
मेलान—सबके सब लाचार कि खिस्ता,
ख्वार बिचारे फिरते हैं ।
जोगीबनके, मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरतेहैं॥३॥
कोइकहेवरबारछोडकर, फिर आयेहमचारोंधाम।
अरसठ तीरथ, नहाये हाथ नआयावो गुलफाम॥

कोई कहे हम ठाट अमीरी, छोडदिया एशो आराम ।
दुनियाँसे भी गये पर तो भी नहिं पाया इसलाम ॥
शेर—कोई कहता उम्रभरसे है हमारी आरजू ।
मिलेगा किसरोज प्यारा दिलमें है यह जुस्तजू ॥
मैं मैं कहते हैं कई और कोई कहता तूही तू ।
पडगये छाले जबाँपर पर मिला नहिं माहरू ॥
मि०-इसीसबबसेहरदमदिलपर, गमकेआरेफिरतेहैं।
जोगी बनके, मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरते हैं ॥४॥
करतेथे अफसोस अँदेशा सबके दिलमें बडा मलाल।
दासअमर भी कहे किसरोज मिले वह दीनदयाल ॥
इतनेमें आगये कहींसे इक् बुजुर्गसाहबे कमाल ।
सफेद दाढी पोस्ता सफेद और सब पाक जमाल ॥
शेर—धरदिया शिरपर मेरे पंजा हुए वो मेहरबां।
आगये नजरोंमें सातों तहजमी कुल आसमां ॥
पवनसे पतला था परदा, जिसके आगू लामकां ।

नूरके चौरङ्गपर बैठा था वह शाहे जहां॥
करीमकमतर उस गुलपुरपरतनमनवारे फिरतेहैं।
जोगी बनके, मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरतेहैं॥५॥

ख्याल ६.

खाकमें हम मिलगये दोस्तों,
खाकमें सब घरबार मिला।
जोगी बनकर, दरबदर फिरे,
पर, वो दिलदार मिला॥ टे०॥
देश विदेशों फिरे ढूंढते,
उसके मुन्तजिर हो होकर।
खाक सार हो,
उसीके दरकी खाकपर सो सोकर॥
किया तर बतर चेहरेको,
चश्मोंके आबसे धो धोकर।
हुए दिवाने, हिज्र उसकीमें हरदम रोरोकर॥

शेर—धूपमें कुछ दिनतपे कुछ रोज हम थंडों मरे।
कहींपर भरपेट खाया कहींपर फाँके करे ॥
कहीं मन्दर और कहींमसजिदमेंजा आसनधरे।
कहीं वस्ती कहीं जंगलमें बिरछ देखे हरे ॥

मिलान—किसीके घर खाये धक्के,
और कहीं गाली गुफतार मिला।
जोगी बनकर, दरबदर फिरे,
न वो दिलदार मिला ॥ १ ॥

आबू और गिरनार ढूंढते, पैरोंमें पडगये छाले।
न्हाये नर्मदा, मिटे नहिं तोभी दिलिके कसहाले ॥
वृन्दावनके वृक्ष वृक्ष, पत्ते पत्ते डाले डाले।
ढूंढफिरे हम, मिला नहिं कहीं वो दिलवरका हाले ॥
शेर—कुंजगलियोंमेंपता कुछ ना लगा दिलदारका।
देखी अयोध्या और मथुरा, ढूंढसारी द्वारका ॥

न्हाये गंगा गोमती, मेला किया हरिद्वारका।
और भी सारा जिला देखा समन्दर पारका॥
मि०-मिला प्रागपुष्करहमको, आगे बद्रीकेदारमिला
जोगी बनकर, दरबदर फिरे न वोदिलदारमिला २
नन्दगाँव बरसानामहाबन, गोकुलकेघरघर झांके।
अरसठ तीरथ, हम आये कई मर्तबे न्हान्हाके॥
योग तपस्या करी बहुत दिन, नीमसारमें भी जाके
अन्न छोड़के कन्द फल फूल रहे कुछ दिन खाके॥
शेर—ना मिला जब वो सनम दिलमें उदासीआगई।
फिर चले उठके तो रस्तेहीमें काशी आगई॥
ना मिला काशीमें जब खिजलत जरासी आगई।
जाबजा सब ढूंढकर एक दिलपे हाँसी आगई॥
मिलान—कहींपै पानी पत्थर और,
कहिं जंगल शहर बजार मिला।
जोगीबनकर, दरबदर फिरे न वो दिलदारमिला"

उत्तरसे दक्खिन देखी, अरु पूरबसे देखी पश्चिम।
परिस्तानमें, गये पर वहांभी मिला न बागो इरम्॥
मक्का और मदीना देखा, और देखा सारा आलम्।
जमीन सारी, देखकर आसमानपर पहुँचे हम॥
शेर–जायके वैकुण्ठको देखा बहिस्तके द्वारको ।
और भी आगू गये बागे अरम गुलजारको॥
देवभी देखे बहुतसे और परी परदारको ।
कुल जमीसे आसमाँ तक देखा उसके कारको ॥
मि०–मिले पीर पैगम्बर हमको,
सनमका नहिं दीदार मिला ।
जोगी बनकर, दरबदर फिरे न वो दिलदारमिला४॥
जन्म अनेकों फिरा भटकते, अब मेरी जागीतकदीर।
एका एकी, राहमें मुरशद मिलगये सत्यकबीर ॥
भरमकी टट्टीतोड़ जिन्होंने, झुरमुटकी तोड़ी जंजीर।
दिल दरगामें, दिखाई आकर दिलवरकी तसवीर ॥

शेर—ना सनमबनमें मिला औरनासनम घरमें मिला।
ना मिला मन्दिरके अन्दर बरन मस्जिदमेंमिला ॥
ना मिला पातालमें और स्वर्गमें भी ना मिला।
ना मिला पानीके अन्दर अरु न पत्थरमेंमिला॥
मिलान—अमरदास आधीन कहे,
इस तनमें सिरजन हार मिला।
जोगी बनकर दरबदर,
फिरे न वो दिलदार मिला ॥ ६ ॥

ख्याल ७.

खटरागी होजाता है, जो दुनियाका खटराग सुनै।
बैरागी बन जाय जो सन्तोंसे बैराग सुनै॥टे० ॥
कामीके जो सुने बचन, उसकी मति जातीहैमारी।
धर्म कर्मको त्यागकर, फिरे ढूंढता परनारी ॥
क्रोधीके जो बचन सुने, तो क्रोध जगेउसकोभारी
अभिमानीके बचन जो सुने तो होवे हंकारी ॥

सुनै वचन लोभीके जो उसको धनकीतृष्णा भारी॥
बढै लबारी, करें चोरी औ ठगोरी बटमारी॥
शेर—मोह मायामें फसें, जो सङ्ग मोहीके रहैं।
पार ना पावे कभी, भवधारमें पड़कर बहैं॥
नर्कमें हो वास, यमका दण्ड वे शिरपर सहैं।
वेदव्यास वसिष्ठइसकी, साख सनकादिक कहैं।
मि०-खेलके वशमेंहोताहै, जो बसन्तहोरीफागसुनै।
बैरागी बनजाय जो सन्तोंसे वैराग्य सुनै॥१॥
जो साधूके बचन सुने, वह होताहै साधू निर्मल।
ज्यों मलीन जल, मिले गंगामें होवे गंगाजल॥
निष्कामी निष्क्रोधी, निर्लोभी निर्मोही हो निश्चल।
ज्ञान अगिनमें, बज्रसाहृदयभी उसका जाय पिघल॥
हत्या दोष कलङ्क पाप सब जन्म जन्मके जावें जल।
गुरू कृपासे, कालभी उसके शिरसे जाता टल॥

शैर—सन्तके उपदेशमें जिसका लगा अनुराग है।
वही इस संसारके विषयोंका करता त्यागहै॥
छोडकर घरबार सब, धारण करै वैरागहै ।
जाय सन्तोंको मिले, उसकाही भारीभागहै॥
मि.-मुक्तिउसीकीहोय,शब्दसन्तोंकाकरकेलागसुनै
वैरागी बनजाय, जो सन्तोंसे बैराग सुनै॥ २ ॥
जिसेलगा वैराग उसेहै, माल मुलकसे नहिं दरकार।
हुकम हुकूमत, तख्त सल्तनतको देता ठोकरमार॥
महल अटारीतात मातसुत भ्रातानारीकुलपरिवार ।
स्वपना जैसा,नजर आताहै उसको सब संसार॥
जोकोईइन्द्रकीमिलेअप्सरा उसकोभीदेताललकार।
घर बस्तीको छोडकर एकान्त रहता निर आधार॥
शेर—जगतके नहिं भोग मागै,स्वर्गका वासा नहीं।
फिकर जीनेकी उसे, और मरणका सांसा नहीं।
मुक्ति ना चाहे, वो ईश्वर दर्शका प्यासा नहीं ।
ख़ास वैरागी वही है,जिसको कुछ आशा नहीं॥

मि० ममतामायारहे नउसके, जोकोईऐसात्यागसुनै;
वैरागी बनजाय जो सन्तोंसे वैराग सुनै ॥ ३ ।
सत्यमता सन्तोंका है और झूठा सब संसारीका।
यही वचन है, श्रीशुकदेव बाल ब्रह्मचारीका ।
सहज नहीं वैराग पदारथ, है यह कीमत भारीका।
शिरके साँटे, ये सोदा बने सन्त बैपारीका ।
मारा बान अमर आशकने, ऐसा ज्ञान कटारीका ।
लगाहै जिसको, रहा नहीं फिर वह दुनियाँदारीका॥
शेर—करदिया अभिमानका, जिसने फतेमैदान है।
दो जहाँका होगया, वो शहनशा सुलतान है ॥
धारके वैराग जो साधू हुआ निरवान है ॥
है वही ज्ञानी जिसे निज आतमाका ज्ञान है ।
मि०-हंसरूपहोजाय, जराजोकानलगाकरकागसुनै
बैरागी बनजाय, जो सन्तोंसे बैराग सुनै॥ ४ ।

ख्याल ८.

ब्रह्म एक पहिचान लिया,
दुबिधा पकडेसे क्या मतलब ? ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र,
इनके झगडेसे क्या मतलब ॥ टे० ॥
अथाह सागर आन मिला,
नदी नालेसे क्या मतलब ।
मूल वृक्ष जब हाथ लगा,
पत्ती डालेसे क्या मतलब ॥
ज्ञानके गोले झोंक दिये,
बरछी भालेसे क्या मतलब ।
आतम तत्त्व विचार लिया,
गोरे कालेसे क्या मतलब ॥
मारग मुक्त मिला जिनको,

रस्ता सडकेसे क्या मतलब ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र,
इनके झगडेसे क्या मतलब ॥ १ ॥
घटमें परगट देखा हरि,
मसजिद मन्दिरसे क्या मतलब ॥
दिव्य ज्योतिके दरश मिले,
सूरज चन्दरसे क्या मतलब ॥
शुन्न शिखरकी करी सैल,
परबत कन्दरसे क्या मतलब ॥
आशा तृष्णा मार भगादी,
तौ इन्दरसे क्या मतलब ॥
मन हस्तीपर है सवार;
गाडी छकडेसे क्या मतलब ।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र,
इनके झगडेसे क्या मतलब ॥ २ ॥

तजादेहअभिमानउसे फिर, मान पानसेक्या मतलब
क्याहिन्दूक्यातुर्क, ऊँचनीचोंकाछानसेक्या मतलब
जिसे लगाबैराग, उसे रंगराग तानसे क्या मतलब।
मालमुल्कसल्तनततख्त, डंकानिशानसेक्यामतलब
लोकलाज सब दूर करी, कुलकेरगड़ेसेक्यामतलब।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र, इनके झगडेसेक्यामतलब ४
मान गुमान बिछा बैठे, फिर बाघम्बरसेक्यामतलब
क्षमा चादरा ओढलिया, भगवेबस्तरसेक्या मतलब॥
मेलासबर सन्तोष. उसे, सुन्दरभोजनसेक्यामतलब
अमरदासनिजघरपाया, घरघर फिरनेसेक्यामतलब।
अपनीआपनिबेडचलो, दुनियाँबिगड़ेसेक्यामतलब।
ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यशूद्र, इनकेझगडेसेक्यामतलब॥४॥

ख्याल ९.

दीवाना कहतेहैं मुझको, यह तो सिर्फ नदानी है॥
मैं हूँ दाना और ये दुनियाँ, सभी दिवानीहै॥टे०॥

लोग कहें दुनियाँ सच्ची, मैं कहता धोखेकी टट्टी।
जर बतलाते लोग मैं, उसीको कहताहूँ मट्टी॥
लोग कहें दुनियाँ ठण्डी, मैं कहता आतिशकीभट्टी।
मीठी कहते लोग मैं कहताहूँ बिलकुल खट्टी ॥
लोग कहतेहैं बडा दुनियामें राजो पाट है ।
मैं तो कहताहूँ सभी स्वपने सरीका ठाट है ॥
लोग कहते हैं, अजब दुनिया की देखी हाट है।
मैं तो कहताहूँ ये सारी पलमें बाराबाट है ॥
लोग जिसे कहतेहैं दूध, हम उसको कहते पानीहै।
मैं हूँ दाना, और ये दुनि० ॥ १ ॥
लोग कहें धन माल इकट्ठा करे वही नर स्यानाहै।
मैं तो कहता वो बिलकुल बेअक्ल दीवाना है ॥
लुटादिया सतनाम ये जिसने, सारामालखजानाहै।
उसके बराबर न कोई आलिम फाजिल दानाहै॥
लोग कहतेहैं बडा संसारमें रस भोग है ।

मैंतो कहताहूँ बहोतसा इसके अन्दर रोग है
जिसकी दुनियासे मोहब्बतउसकोंनितउठसोगहै।
रहते सदा आनन्द,जिनको गुरुने बक्सा योगहै॥
तजा जगतजंजालको जिसने,वही सन्तनिर्वानीहै।
मैं हूं दाना, औ० ॥ २ ॥
लोगोंको भाता पीतांबर, तनपर शाल दुशालाहै।
मुझको भाती गुदड़िया, फटी और मृगछालाहै॥
लोगोंने खुसबोई अरगजा अबीर तनपर डालाहै।
खाख धूलसे मैंने अपना जिसम संभाला है॥
लोग बनवाते महल भारी सजे दालान है।
सेज फूलोंकी बिछी और ऐसका सामान है॥
मेरी छोटी झोपडीमें ही गुजर गुजरान है।
खाकका बिस्तर हमेशा सतगुरुका ध्यान है
ठाट अमीरीसे बेहतर यह मैंने फकीरी जानी है।
मैं हूँ दाना, और यह० ॥ ३ ॥

खट्टे मीठे मधुर औ षटरस भोजन सबको भातेहैं
और हजारों नियामत खाते नहीं अघाते हैं ॥
रूखे सूखे टुकडोंसे हम दिल अपना समझातेहैं
जो कुछ हमको सहजमें मिले वही हमखातेहैं ॥
अशके अल्लाह जो दुनियासे न्यारे होगये ।
होकर दुनियासे बुरे पीतमके प्यारे होगये ॥
खाक सारी करके आशिक गुल हजारे होगये
खाक सारीमें खुदाके खुद निजारे होगये ॥
अमरदास आशिककी बानी मस्तानी हक्कानी है
मैं हूँ दाना और यह दुनिया सभी दिवानीहै४।

इतिश्रीमहोपदेशकमहन्तशंभूदासकबीरपंथी इंदौर
निवासीसंग्रहीत कबीर भजनमाला समाप्त ।

शुभं भवतु